REVISTA DOS CRIADORES

A SERVIÇO DA PECUÁRIA NACIONAL
1995 - ANO LXV- Nº 784 - R$ 5,50
ÓRGÃO OFICIAL DA ABC

# CONTROLE LEITEIRO - 50 ANOS DE LUTA

## A África do Sul inspira a genética da Mundo Novo

## CONTROLE ESTRATÉGICO DA VERMINOSE

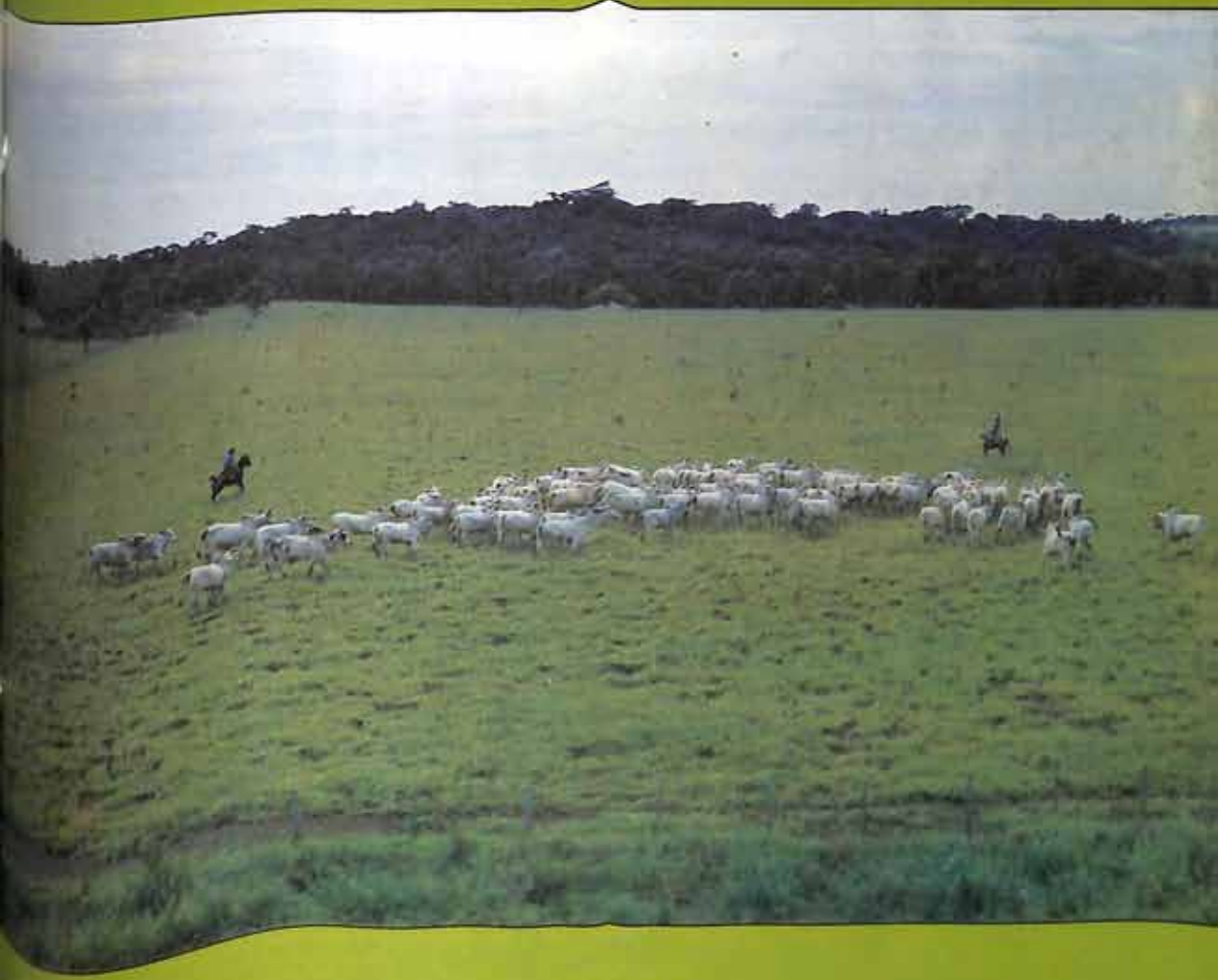

Pastagem de Capim Marandú, na Fazenda Modelo, da EMBRAPA, em Campo Grande, MS, onde se realizaram as pesquizas do trabalho intitulado: "Controle estratégico da verminose," que publicamos nesta edição. Foto Eliana.

SELECT SIRES INC.

# A LIDERANÇA CONTINUA

## LIDER NO TESTE DO TEMPO

Na parte III do "Sire Sumaries" estão os 200 touros "TOP" em TPI inativos com provas para produção e tipo com confiabiliade igual ou maior que 90%. Estes são os 200 touros "TOP" da geração que antecedeu a geração de hoje para produção e tipo. A parte III do "Sire Sumaries" também mostra que estes 200 touros testados pelo tempo são os líderes da raça.

| | Nº entre os 200 touros "Top" | % entre os 200 touros "Top" |
|---|---|---|
| SELECT SIRES | 55 | 27,5% |
| A | 38 | 19,0% |
| B | 36 | 18,0% |
| C | 29 | 14,5% |
| D | 12 | 6,0% |
| E | 11 | 5,5% |
| F | 10 | 5,0% |
| G | 8 | 4,0% |
| H | 1 | 0,5% |

## LÍDER NOS TESTES DAS CARACTERÍSTICAS ECONÔMICAS EXPRESSAS EM DÓLARES
LEITE + PROTEÍNA + GORDURA

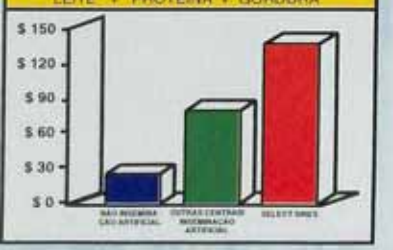


## LÍDER ENTRE OS 100 TOUROS HOLANDESES TOP EM ÍNDICE TIPO-PRODUÇÃO (TPI)

**23 são touros Select Sires**
**53 são touros filhos de touros Select Sires**
**60 touros netos de avós maternos Select Sires**
**75 touros ou são filhos ou são netos de touros Select Sires.**
**5 touros entre os 11 "TOP" são Select Sires**
**78% dos touros "TOP" em TPI são filhos de touros Select Sires ou tem mãe Select Sires ou são Select Sires.**

## LIDER NAS VENDAS DE SÊMEM NO BRASIL

| | | |
|---|---|---|
| SELECT SIRES | 288.908 | doses vendidas |
| Empresa A | 141.522 | " " |
| Empresa B | 136.293 | " " |
| Empresa C | 123.453 | " " |
| Empresa D | 104.467 | " " |
| Empresa E | 75.579 | " " |
| Empresa F | 39.895 | " " |

## LÍDER EM Nº DE TOUROS PROVADOS

| TOURO | PTA LEITE | PTA PROT | PTA GORD | CONF. | PTA TIPO | TOURO | PTA LEITE | PTA PROT | PTA GORD | CONF. | PTA TIPO |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Raça Holandesa | | | | | | | | | | | |
| 7H1570 BLIZARRO | + 776 | +26 | + 2 | 99% | +1.14 | 7H1960 SUPREME | +1162 | +17 | +31 | 99% | |
| 7H965 WINE | +1150 | +20 | +18 | 99% | +0.79 | 7H2224 MAGICIAN | +1517 | +42 | +51 | 99% | |
| 7H2224 MAGICIAN | +1517 | +42 | +51 | 99% | -0.03 | 7H2246 WASHINGTON | + 864 | +28 | +34 | 99% | |
| 7H2249 OSADO | +1810 | +48 | +38 | 99% | -0.23 | 7H2257 MARK ARTHUR | + 465 | +19 | +19 | 95% | |
| 7H3021 ELMER | +1511 | +44 | + 9 | 99% | +0.23 | 7H3088 RAMBO | + 476 | +25 | +42 | 99% | |
| 7H3100 ODYSSEY | +1462 | + 3 | - 5 | 99% | +1.40 | 7H3125 MISTER | +1362 | +33 | +35 | 99% | |
| 7H3132 STARWALKER | +1194 | +23 | +23 | 99% | +1.31 | 7H3138 TAYLOR | +1170 | +26 | + 3 | 87% | |
| 7H3176 GAMBLER | +1286 | +13 | + 2 | 99% | +1.31 | 7H3192 JETSTAR | +1048 | +28 | +50 | 97% | |
| 7H3204 CONAN | +1403 | +42 | +40 | 77% | +1.85 | 7H3235 ROLEX | + 858 | +15 | +23 | 86% | |
| 7H3257 HIGHLIGHT | +1265 | +29 | +40 | 98% | +2.48 | 7H3296 MALACHI | + 968 | +32 | +5 | 90% | |
| 7H3302 GRANT | +1514 | +45 | +21 | 87% | +1.13 | 7H3305 JEPARDY | +1126 | +29 | +21 | 84% | |
| 7H3310 BEETHOVEM | +1468 | +34 | +22 | 85% | +0.16 | 7H3326 ALEX | +1039 | +29 | +30 | 75% | |
| 7H3340 CHOICE | +1182 | +40 | +18 | 85% | +1.27 | 7H3356 ROY | + 966 | +35 | +43 | 83% | |
| 7H3392 ELVIN | +1870 | +61 | +32 | 79% | +1.57 | 7H3418 ANGELLO | + 971 | +37 | +54 | 83% | |
| 7H3425 NOVA | + 684 | +18 | +62 | 80% | +1.75 | 7H3429 INKA | +1032 | +21 | +32 | 82% | |
| 7H3436 KEMPER | +1945 | +51 | + 6 | 93% | - 0.30 | 7H3438 BELFAST | +1376 | +31 | +32 | 87% | |
| 7H3479 ECHO | + 960 | +32 | +54 | 78% | +0.48 | 7H3485 PEPPER | + 525 | +38 | +11 | 89% | |
| 7H3504 EXTRA | +1339 | +48 | +26 | 86% | +0.11 | 7H3515 CLED | +1323 | +44 | +21 | 81% | |
| 7H3523 DAVID | + 781 | +25 | +53 | 92% | +1.49 | 7H3532 CHESAPEAKE | +1404 | +27 | +25 | 83% | |
| 7H3545 KYLE | +1064 | +36 | +28 | 83% | +1.28 | 7H3555 CYRUS | +1259 | +28 | +15 | 85% | |
| 7H3562 SILVERADO | + 982 | +12 | +31 | 86% | +1.50 | 7H3599 LOG CABIN | +1128 | +24 | +11 | 85% | |
| 7H3605 MILLER | +1731 | +44 | +69 | 83% | - 1.07 | 7H3626 SHAZAM | + 865 | +24 | +16 | 75% | |
| 7H3638 LEWIS | +1298 | +36 | +32 | 90% | +0.56 | 7H3646 FENTON | +1467 | +30 | +22 | 85% | |
| 7H3663 CLASSIC | +1629 | +64 | +82 | 83% | - 0.51 | 7H3668 BIG TIME | +1097 | +39 | +46 | 91% | |
| 7H3679 ABEL | +1683 | +47 | +16 | 79% | +0.72 | 7H3707 MATHE | +1317 | +28 | +42 | 91% | |
| 7H3709 BRENT | + 936 | +34 | +54 | 84% | +1.29 | 7H3714 VISTON | +1608 | +45 | +52 | 87% | |
| 7H3716 STARBOARD | +1183 | +47 | +28 | 75% | +2.14 | 7H3721 DANVER | + 321 | +32 | +32 | 86% | |
| 7H3739 TONIC | + 208 | +40 | +41 | 96% | +1.16 | 7H3758 GARFIELD | +1339 | +49 | +60 | 82% | |
| 7H3804 GEOFFRY | + 689 | +54 | +87 | 82% | +1.24 | 7H3824 SPARKY | +1363 | +44 | +49 | 90% | |
| 7H3847 HUNTER | +2212 | +67 | +73 | 89% | +0.61 | 7H3872 OBSESSION | +1153 | +34 | +28 | 82% | |
| 7H3874 K MAX | + 980 | +21 | +31 | 88% | +1.57 | 7H3880 BARMES | +1723 | +36 | +25 | 90% | |
| 7H3881 PACIFIC | +1155 | +40 | +31 | 78% | +0.91 | 7H3885 NET-WORK | +1374 | +39 | +29 | 73% | |
| 7H3886 EXTREME | +1494 | +43 | +54 | 80% | +1.65 | 7H3901 STEAMER | +1216 | +35 | +40 | 80% | |
| 7H3906 ALVIN | +1264 | +49 | +39 | 74% | +1.88 | 7H3912 METHENY | +1986 | +30 | +47 | 80% | |
| 7H3917 BAHAMA | + 761 | +14 | +47 | 87% | +1.29 | 7H3919 MAZDA | +1157 | +36 | +55 | 88% | |
| 7H3920 SEBASTIAN | + 809 | +23 | +28 | 93% | +2.07 | 7H3931 CONTINENTAL | +1194 | +28 | +36 | 79% | |
| 7H3943 SPOILER | +2116 | +46 | +58 | 82% | +0.04 | 7H3945 AUSTIN | + 873 | +17 | +24 | 91% | |
| 7H3948 EMORY | +1966 | +51 | +39 | 82% | +2.16 | 7H3949 ROBERT | + 977 | +30 | +45 | 87% | |
| 7H3952 REMARKABLE | +1118 | +41 | +65 | 78% | +1.53 | 7H3965 CALCIUM | +1591 | +40 | +57 | 74% | |
| 7H3967 BRILIANT | +1225 | +39 | +40 | 84% | +1.72 | 7H3993 VERTUOSA | +1070 | +27 | +63 | 79% | |
| 7H3994 RC MATT | +1697 | +52 | +42 | 74% | +2.25 | 7H4020 WHAMO | + 830 | +38 | +33 | 78% | |
| 7H4031 SKYMAWK | + 841 | +36 | +13 | 86% | +1.96 | 7H4034 TITAN | + 556 | +42 | +16 | 98% | |
| 7H4035 PERSPIRATION | +1295 | +46 | +45 | 68% | +1.32 | 7H4087 KEITH | +1349 | +39 | +22 | 81% | |
| 7H2236 ELTON | +1560 | +62 | +54 | 99% | +1.53 | 7H3038 NICK | +1135 | +49 | +37 | 89% | |
| 7H3058 BURGUND-RED | + 763 | +14 | - 1 | 74% | +0.23 | 7H3878 INSTIGATOR RC | + 263 | +7 | +22 | 70% | |
| 7H4059 ADONIS RC | + 851 | +24 | +29 | 64% | +1.26 | 7H3653 CHIEFTAIN RC | +1021 | +26 | +14 | 96% | |
| 7H3389 KID | + 461 | +31 | +21 | 86% | +0.36 | 7H3118 SCIL | + 315 | +7 | +24 | 98% | |
| 7H3167 LA STAR | +1112 | +11 | +10 | 92% | - 0.10 | 7H3593 TEDDY | + 781 | +24 | +31 | 85% | |
| 7H3380 REDMAN RED | + 944 | +18 | +15 | 95% | - 0.34 | | | | | | |
| Raça Jersey | | | | | | | | | | | |
| 7J254 BERRETA | +1481 | +66 | +35 | 96% | +3.50 | 7J 258 PROTEIN | +1691 | +51 | +29 | 79% | |
| 7J252 TRADER | +1254 | +45 | +74 | 91% | +2.60 | 7J 290 BARBER | +1349 | +44 | +59 | 76% | |
| 7J159 SOONER | +1610 | +42 | +22 | 99% | +3.30 | 7J 207 HERITAGE | +1108 | +37 | +51 | 99% | |
| 7J232 REVENUE | +1071 | +35 | +37 | 85% | +1.10 | 7J 212 MALCOLM | + 949 | +34 | +45 | 89% | |
| 7J300 CHARLIE | +1262 | +30 | +27 | 72% | +0.70 | 7J 321 DC | + 960 | +32 | +29 | 56% | |
| 7J236 MARSHAL | + 763 | +27 | +38 | 89% | +0.80 | 7J 255 LEVERAGE | + 630 | +33 | +24 | 81% | |
| 7J345 CLIFF | + 943 | +22 | +12 | 58% | +0.70 | 7J 257 LANGER | + 822 | +20 | +35 | 84% | |
| Raça Parda Suiça | | | | | | | | | | | |
| 7B693 PROPHET | +1635 | +45 | +52 | 66% | +0.20 | 7B 714 CHALLENGE | +1257 | +34 | +41 | 72% | |
| 7B681 SELECTMAN | + 402 | +40 | +49 | 78% | - 0.20 | 7B 666 BLEND | + 478 | +21 | +28 | 95% | |
| 7B719 STARTRECK | + 331 | +24 | +28 | 65% | +0.10 | 7B 682 SENSATION | + 390 | +12 | +14 | 88% | |

## LÍDER EM ÍNDICE TIPO-PRODUÇÃO NAS PRINCIPAIS RAÇAS

Maior TPI na Raça Holandesa: TPI = +1491
7H3222 STARDELL CHIEF ADAM - ET
Maior TPI na Raça Jersey: TPI = +297
7J254 MASON BOOMER SOONER BERRETTA
Maior TPI na Raça Parda Suiça: TPI = +226
7B693 TOP ACRES DOTSON PROPHET - ET

**SELECT SIRES é importada e distribuida por:**

SEMBRA Técnicas e Produtos de Reprodução Ltda.

**MAIS GENÉTICA POR MENOS REAIS**

Rodovia Brigadeiro Faria Lima, km 426 - Tels.: (0173) 22-2787 - 22-2888 - Fax: 22-4817 - Cx Postal 15 - CEP 14780 - BARRETOS
INSCRIÇÃO NO CGC 49.150.261/0001-87 INSCRIÇÃO ESTADUAL 204.030.003.110

**REVISTA DOS CRIADORES**

**Fundada em 1930**

A Revista dos Criadores, órgão oficial de divulgação da Associação Brasileira de Criadores, destina-se ao fomento e melhoria da pecuária nacional.

**Diretor Responsável:** Luiz de Almeida Penna.

**Redação:** Najar Tubino (MS)

**Projetos Especiais:** Edilson Pereira da Silva

**Paginação:** Antonio Augusto Silva

**Arte Visual:** Luiz de Almeida Penna

**Colaboradores:** Ruy A. Bastos Freire e F. Teodini, Fidelis Alves Neto, General Diogo Ribeiro, Manoel J. de Alcantara, Antonio Cabrera.

**Fotografia:** Alfredo Ribeiro

**Departamento de Publicidade da Editora:**
**Gerente:** Luiz de Almeida Penna Filho

**Representante Comercial:** Carvalho Hamacek Ltda. e Charles Alves

**Assinatura:** 12 edições da Revista, com o Suplemento do Controle Leiteiro: Número atrasado, ao preço da capa da edição em circulação. Publicação Mensal.

**ISSN 0034-9259**

**Departamento de Assinatura:**
**Gerência:** Maria Nazareth de Castro Penna.

**Redação:** Av. Dr. José César de Oliveira, 175 - Cep 05321-000 - Tel.:(011)831.7712 e 831.7966 R.253 - Fax.: 831.7712.

**Editoração Eletronica:**
**Responsável:** Silvia M. P. de A. Moura

**Venda Avulsa: Rio de Janeiro - RJ.** Guanabara Jornais e Revistas Ltda., Rua Antonio Ribas, 72 **Londrina - PR** Jornal - Com. Publ.de Jornais e Revistas Ltda., Rua Minas Gerais, 61. **Fortaleza - CE** Distribuidora de Jornais e Revistas - R. Maximiniano da Matta Teixeira, 708 sala 01-05 - Centro - Cep 74.000 **Belo Horizonte - MG** Agência Van Damme Ltda. Rua Guaicurus, 505 - Cep 30180.

Jornal de Remessa dos Exemplares da RC aos associados da ABC, Departamento Social - Av. José Cesar de Oliveira, 175 - Jaguaré - Cep 05317-000 - São Paulo - SP.

As artigos assinados nem sempre traduzem a orientação da diretoria e da ABC e são de responsabilidade dos que os assinam. Autorizamos a transcrição de trabalhos aqui publicados desde que sejam citados nosso nome e a edição.

**ANO LXV - MAIO DE 1995 - Nº 784**

# Nesta Edição

*Nesta edição publicamos a entrevista do médico veterinário Fidelis Alves Netto, na qual conta a história dos 50 anos de existência do Serviço de Controle Leiteiro da ABC, do qual foi um de seus fundadores. Conta, que em 1965 viajou 12 mil Km pela Europa conversando com grandes especialistas no assunto e agora, ainda em plena atividade, dirige no SCL da ABC uma das seções que organizam o Programa de Testes de Progênie. Ainda, sobre este assunto temos as matérias intituladas:"Sugestões para definir as atribuições das comissões de seleção e estudos sobre o tema : Reprodutores Leiteiros. Sobre Pecuária de Corte temos interessante entrevista com o criador Fernando Penteado Cardoso, e selecionador de Nelore, sobre a viagem ao criatório da Africa do Sul, onde os técnicos sul-africanos "tinham uma filosofia bem pé-na-terra que eu achei bastante adequada ao Brasil". Seu filho Eduardo, o acompanhou nessa viagem e o que mais chamou sua atenção foi a ausência de competição entre os criadores."Nas Exposições de gado, os animais não são levados a julgamento de exterior. É a Sociedade de Criadores de Gado Bosmara que escolhe os animais a serem exibidos ao grande público em exposições". Ainda sobre pecuária de corte temos o interessante trabalho intitulado "Controle Estratégico de Verminose em Gado de Corte" de autoria dos técnicos da Embrapa, Drs. Michael R. Honer e Ivo Bianchi. Esse trabalho mostra um resultado imediato desse controle: a diferença de peso vivo entre animais tratados e não tratados para verminose pode chegar a 40 kg ou mais. Em continuação temos a reportagem na Fazenda Cachoeira de propriedade de Regina Marchesi, onde tem-se por objetivo a produtividade ou seja, um gado mais jovem e mais pesado para abate. Sobre pecuária leiteira, temos as matérias: "Alfafa-Comportamento da Cultura. Estabelecimento e Evolução", de Eldo Lauro Berzer; "Blad - deficiência da adesão leucocitária bovina", de Marcos Miguel Ferraz; "A Dieta Total Misturada", de Winston Vicente Giardini e, "Será que fazer silagem de milho é facil?", de Joseph H. Kreamer. Com respeito a equinocultura, o leitor encontrará o interessante artigo; "Propriedade rural exige administração eficiente e profissional". Sobre o imposto territorial rural, temos a apreciacão intitulada: "A Municipalização do ITR", de autoria do Dr. Antonio Cabrera, atual Secretário da Agricultura e finalmente o Indicador Agropecuário "Cooxupé".*

# ASSOCIAÇÃO BRASILEIRA DE CRIADORES

(Ex-Associação Paulista dos Criadores de Bovinos). Reconhecida como de utilidade pública pelo Decreto Estadual nº 33.811, de 20 de outubro de 1958.

Registrada no Ministério da Agricultura sob nº 35, com jurisdição nacional

**67 ANOS DE BONS SERVIÇOS PRESTADOS AOS CRIADORES**

DIRETORIA

**Presidente**

Guilherme Monteiro Junqueira

**Vice-Presidente**

Alberto Chap Chap
João Antonio Carneiro
Rubens Mello de Souza Campos Filho
Roberto Cano de Arruda
Carlos Eduardo Vieira Ribeiro

**Secretários:**

Carlos Brito Soares
Lucio Manoel de Campos Seabra

**Tesoureiros:**

Henrique Lambert Junior
João de Freitas Britto

CONSELHO DELIBERATIVO

**Presidente**

General Diogo Branco Ribeiro

**Vice-Presidente**

Luiz Rondon Teixeira de Magalhães

**Conselheiros Natos**

João de Moraes Barros
José Bonifácio Coutinho Nogueira
Hélio Moreira Salles
Joaquim Barros Alcântara Filho
Manoel Elpidio Pereira de Queiroz Filho

**Conselheiros Efetivos**

Orlando de Mesquita Sampaio
Manoel José de Alcântara
Luiz Glycerio Gracie de Freitas
Carlos Alberto Julio Lohmann
José Cali
Virgílio de Almeida Penna
Antonio de Oliveira Pereira
José Cassiano Gomes dos Reis Junior
Henrique de Souza Dias
Vicente Martins Junior
Luiz Baptista Pereira de Almeida
Custódio Cabral de Almeida
Roberto Rodrigues
Pedro de Paula Leite Moraes
Geraldo Diniz Junqueira
Pedro de Camargo Neto
Fernando Euler Bueno
Arnaldo Lima
Antonio Carlos Turezza
Vitorio Aprael de San Martino
Francisco Jacintho da Silveira
Jayme Vita Roso
Sylvio Iasi Junior
Elder Ribeiro Dantas Filho

**Suplentes**

Gil Souza Ramos
Luiz Egydio Constantini
Francisco Prado Rennó
Ovídio Carlos de Brito
Ruy Calazans de Araújo
Henrique Antonius Wagenaar
Cicero Toledo Piza Filho
Paulo de Mingo Vaz de Arruda
Claudio Sobral Galeão de Castro
Dionisio Alegria Leal
Roberto Bittencourt
José de Castro Rodrigues Neto
José Luiz Barsini Cotrim
Carlos Eduardo Zampieri
Frederico Jayme Pires

CONSELHO FISCAL

**Efetivos**

Antonio Tadeu Jelad
Arnaldo A. Pedro Carrero
William Rapchan Bertio

CONSELHO TÉCNICO DELIBERATIVO

**Presidente**

José Cali

**Vice-Presidente**

Manoel José de Alcântara

**Secretário**

Antonio Carlos Gouvêa

**Conselheiros**

Representante do Ministério da Agricultura
Med. Vet. Dr. Wanderley Antunes
Fidélis Alves Netto
Manoel José de Alcântara
Demary Junqueira Dias
Carlos do Amaral Cintra
Fernando do Prado Rennó
Fernando Gomes de Castro Júnior
Guilherme Lange Goulart

**Comissão Regional do Rio de Janeiro**

Presidente: Custódio de Almeida
Vice-Presidente: Elder Ribeiro Dantas Filho

DEPARTAMENTO JURÍDICO

**Consultor Jurídico**

Jayme Vita Roso, Advogado

DEPARTAMENTO TÉCNICO

**Provas Zootécnicas e Registros**

Cláudio Cicero Sabadini, Zootecnista

**Assistência Técnica - Veterinária**

Antonio Carlos Gouvêa, Med. Vet.

**SÃO PAULO :** . Av. José Cesar de Oliveira, 175 - CEP 05317-000
Tel.: 831-7982, 8312731 e 261-8438

# I -50 ANOS DE LUTA

*Ruy Bastos Freire Filho*
*Zootecnista*

***Para o Dr. Fidelis Alves Netto, enfrentar desafios para melhorar o patrimônio genético do rebanho leiteiro brasileiro, é um habito adquirido. Há 50 anos ele implantava o Serviço de Controle Leiteiro da ABC, e há 40 anos vem lutando pela introdução dos testes de progênie para a avaliação de touros que possam melhorar o rebanho leiteiro no pais. Para este veterinário de 81 anos, em que pesem seus serviços prestados até hoje a pecuária leiteira, seu trabalho ainda não terminou. Um apaixonado pelos testes de progênie, já aposentado em 1965, viajou 12 mil Km de carro pela Europa conversando com as principais autoridades no assunto. Persistente, publicou um trabalho nas páginas desta Revista em junho do ano passado, explicando a urgência dos testes de progênie. Seus esforços resultaram no agrupamento de entidades que hoje organizam a implantação do Programa de Testes de Progênie.***

***R.C- O Sr. sempre esteve ligado a pecuária de leite?***

FAN- Durante a maior parte de minha vida profissional. Trabalhei no Serviço de Inspeção do Leite da Secretaria da Agricultura durante 10 anos. Fiz inspeção tanto no interior como na Capital. Nessa época ajudei a instalar várias usinas de beneficiamento de leite por todo estado. Também fui professor da cadeira de beneficiamento de leite de um curso de técnico em usinas de beneficiamentos, de 1940 a 1942. Quando em 1946 eu me transferi para divisão de Fomento da Produção Animal, fui nomeado chefe do Controle de Produção Animal. De 1959 a 1964 fui diretor desta divisão. Ai naturalmente não existia com leite apenas. Na parte de pecuária de corte trabalhei 15 anos nos concursos de novilhos de corte.

***R.C- Como foi sua participação na criação do Serviço de Controle Leiteiro da ABC?***

FAN- Trabalhava apenas no período da tarde na secretaria, o que me permitia trabalhar na Revista dos Criadores, escrevendo artigos técnicos. Com isto criou-se meu elo com a ABC. Em 1943, Dr. Arnaldo de Camargo, o então diretor técnico da ABC, me convidou para criar o

*Dr. Fidelis Alves Neto, ex-diretor do Serviço de Controle Leiteiro e Coordenador do P.T.P.*

Serviço de Controle Leiteiro dentro da associação. Então passei a trabalhar diretamente dentro da ABC planejando o controle leiteiro. Mas quando completei o estudo e mostrei ao Dr. Arnaldo como deveria ser feito ele levou um susto. Ele sentiu que seria a criação de um novo serviço dentro da associação, que não tinha prazo para acabar e que iria implicar em grandes despesas para a entidade. Enquanto ele não se decidia, por sugestão de um colega, acabei levando meu projeto como uma tese a ser apresentada no II Congresso Brasileiro de Veterinária em Belo Horizonte, em 1943. A tese teve ótima recepção neste congresso e o Ministério da Agricultura se propôs a difundir o trabalho. Graças a este sucesso o Dr.Arnaldo se empolgou e pediu que executasse o plano. Já em fevereiro de 1945 o Serviço de Controle Leiteiro entrou em funcionamento.

***R.C- Quais as dificuldades que o Sr. encontrou na implantação do serviço?***

FAN- Meu primeiro problema foi como pesar o leite e analisar gordura dentro das fazendas. Estávamos começando da estaca zero. Nada tinha sido feito no Brasil até aquele momento. Mas ai surgiram as primeiras colaborações da iniciativa privada. O diretor do laticínio Vigor na época, Otto Jordan, ficou sabendo do Controle Leiteiro pelos jornais, e se prontificou a me ajudar. Ele me deu a primeira mala para análise de gordura. Ai surgiu outra dificuldade: transportar esta mala com os reagentes químicos e instalar as estantes e centrífugas nas fazendas. Depois os criadores passaram a comprar a centrífugas e armazenar o acido sulfúrico e outros reagentes dentro da fazenda, é que nos poupava fazer os controladores carregarem isto de uma propriedade para outra. Em seguida veio o problema de como pesar o leite. Não haviam balanças próprias para a pesagem do leite. Tive que recorrer a um velho colega do ginásio, Osvaldo Fillizola, das balanças Fillizola, que desenvolveu uma balança especial para controle leiteiro. Felizmente contamos com o apoio financeiro das usinas de leite, todas deram recursos para o trabalho, a indústria de rações Socil que deu os impressos para o Controle Leiteiro, e a Revista dos Criadores que imprimiu o regulamento.

***R.C- O que o criador tinha que pagar por este serviço?***

FAN- Ele pagava uma taxa por vaca controlada, a diária, e as despesas do controlador. Como a Associação tinha interesse em desenvolver o trabalho ela arcava com uma parte destes custos, para não desistimular o criador a ingressar no controle leiteiro. Hoje o serviço é inteiramente auto-sustentado.

***R.C- Quando foi que o senhor começou a pensar na Implantação de testes de progênies para touros de leite?***

FAN-Com o desenvolvimento do Controle Leiteiro nós podemos sentir a capacidade de produção do rebanho nacional, com isto podemos também relacionar boas produções com a filiação de certos reprodutores. Por coincidência, em 1952 fiz uma viagem aos Estados Unidos como técnico da Secretaria de Agricultura, e tive a oportunidade de conhecer, também, o trabalho de melhoramento leiteiro desenvolvido no Canadá. Eles tinham um programa embrionário de testes de progênie, no qual eles tinham uma ficha onde constavam os dados de produção das filhas de todos os touros. Como diretor do Serviço de Controle Leiteiro da ABC fiquei empolgado com a ideia, e voltei ao Brasil querendo executar um programa semelhante. Foi na minha volta que publiquei meu primeiro trabalho sobre os assuntos; "Nova etapa no Serviço de Controle Leiteiro- Categoria de touros provados". Com este foram 11 os meus trabalhos publicados sobre testes de progênie. Já aposentado da Secretaria da Agricultura estive ainda duas vezes na Europa, no final da década de 60, encontrando as princip[ais] autoridades no assunto. Em [uma] destas viagens fiz 12 mil Km [de] Volkswagen pelo velho Co[n]tinente.

***R.C- Como o senh[or] pretende vender o teste [de] progênie para os laticínios?***

FAN- Os laticínios são [os] principais interessados no cr[es]cimento da produção vertical [de] leite. Até aqui, laticínios q[ue] precisam aumentar seu cons[umo] de leite tem que estender as li[nhas] de leite, isto é, um aumento [no] numero de propriedades p[ara] suprir sua demanda. Isto v[em] ocorrendo desde 1930. Com es[se] crescimento horizontal, hoje te[m] laticínios em São Paulo busca[m] leite até na Bahia. Acho q[ue] estamos alcançando o limite de[sse] expansão. Querendo mais le[ite] agora, temos que mudar o rebanho e crescer a produção vertical [de] leite. Para isto temos que seguir [os] modelos que deram certo [no] mundo inteiro, usando os testes [de] progênie para melhorar [a] composição genética das vacas. Isto vai redundar em [uma] significativa queda de custos [para] as usinas de leite.

***R.C- Para testarmos [um] grande numero de reprodutores que é essencial para uma boa taxa de ganho genético, teríamos que envolver não só os rebanhos puros de raça, como também rebanhos mestiços. Os produtores que trabalham com animais de raças puras são automaticamente beneficiados com o controle leiteiro já que a progênie de boas vacas e touros pode ser comercializada como reprodutores. Os produtores de gado mestiço não tem esta vantagem. Como o senhor pretende atrair um maior número de plantéis mestiços para o controle leiteiro e conse-quentemente para os testes de Progênie?***

FAN- Para atrair estes rebanhos mestiços nós vamos precisar também da indústria de laticínios. Por outro lado, [já] podemos observar o que está ocorrendo no teste de progênie [de]

gado Gir leiteiro, que utiliza 60% de vacas mestiças para avaliar seus touros. Por um acordo entre criadores e Centrais de Inseminação Artificial, as últimas se comprometem doar 500 doses gratuitas dos touros em teste para serem inseminadas nas vacas que participam dos testes de progênie. Como o sêmen é gratuito, os criadores de gado mestiço, apesar de terem que arcar com os custos do controle leiteiro, acabam tendo o benefício de utilizarem sêmen de elite sem pagarem por ele.

***R.C- O senhor acredita que as Centrais de Inseminação Artificial e os criadores concordarão em distribuir o sêmen de graça?***

FAN- No caso do Gir leiteiro isto já ocorre. E depois mesmo que os touros sejam de elite, eles ainda não são touros provados, isto é, ainda não sabemos se são melhoradores ou não. Os criadores que inseminam suas vacas com estes touros também não sabem o resultado destes cruzamentos. De qualquer maneira, as Centrais de Inseminação Artificial são favoráveis a doação de 500 doses de sêmen por cada reprodutor em teste. Tenho uma carta da PECPLAN em que ela concorda em trabalhar neste projeto nos moldes que vem sendo feito no Gir Leiteiro.

***R.C- Outra questão que pode ser polêmica é a questão dos cruzamentos que vão originar os tourinhos para o teste de progênie. Geralmente os criadores sele-cionam também gado para exposições, e muitas vezes o touro melhorador não é um com o melhor exterior, e alguns criadores podem não querer cruzar suas melhores vacas com touros que podem não ter um bom tipo. Como o senhor pretende resolver esta questão ?***

FAN- Esta é uma questão difícil de resolver. Eu acho que não podemos interferir nas opções do criador. Ai é preciso que o produtor se lembre que não vai bastar bons aprumos, boa caracterização racial, boa linha de dorso etc, para garantir uma boa produção de leite. Na medida do possível é melhor combinar as duas coisas. Levei a reunião algumas sugestões (ver matéria a seguir) para regular este assunto. Na primeira parte sugeri estabelecer exigências mínimas para as mães de candidato a teste. Ai podemos incluir critérios de exterior do animal e produção leiteira e mantegueira controladas. Acho que as produções destas mães devem estar sempre acima da média da raça. Na segunda parte vem a escolha dos pais que deve obedecer critérios semelhantes. Acho que cada Associação de Registro de raças deve ter a sua comissão de seleção, e cabe também a estas associações acompanharem a inseminação e a criação de novilhas dentro de cada raça. O trabalho de testes de progênie eu divido em três fases. A primeira é a seleção de touros candidatos e a coleta de sêmen, a segunda, é a inseminação e a criação das novilhas filhas dos touros, e a terceira parte o controle leiteiro desta filhas e suas contemporâneas de rebanho. Este controle deve incluir não apenas a produção total de leite como a analise de gordura e proteína. Faço outras sugestões, no sentido de aprimorar a precisão na avaliação destes touros. Cada touro em teste deve ter suas filhas espalhadas por um grande numero de rebanhos para aumentar a precisão com que avaliamos seu valor genético. De qualquer forma temos um grupo técnico que esta discutindo o assunto.

***R.C. - O Sr. acredita que a melhor forma da ABC e do Sr, celebrarem os cinqüenta anos do Serviço de Controle Leiteiro seja com a implantação do Programas de Testes de Progênies ?***

FAN- Como o controle leiteiro o teste de progênie é uma coisa que iniciamos hoje e não terminamos mais. Os 50 anos do Serviço de Controle Leiteiro nos lembram isto. Quando projetei o controle leiteiro eu visava o melhoramento genético do rebanho brasileiro. Na década de 50 escrevi que achava que já era tempo de iniciarmos uma nova etapa no controle leiteiro que seriam os testes de progênie. Ainda não era. Hoje eu acredito que a ideia esteja madura. Se este projeto for adiante, talvez esta seja uma das melhores formas que tanto para mim quanto para a ABC de celebrar este cinquentenário. Acho que isto ratifica a grande contribuição que demos para o aumento da produção leiteira no pais.

Foscálcio® Serrana
Totalmente isento de metais pesados e elementos radioativos*
ÚNICO FOSFATO BICÁLCICO A CONQUISTAR A ISO 9000
* de acordo com os padrões do NRC (National Research Council-USA)
Serrana Nutrição Animal
FONE: (011) 545-3124
CERTIFICADO ISO 9002 NBR-19002

# II - SUGESTÕES PARA DEFINIR AS ATRIBUIÇÕES DAS COMISSÕES DE SELEÇÃO

*Dr. Fidelis Alves Neto*
*Coordenador de P.T.E.*

**1ª FASE:**
Seleção de reprodutores:

1. Estabelecer exigências mínimas para as mães de candidatos ao teste como:

a) de tipo, com preocupação para aprumos e conformação de úbere.

b) gozar de boa saúde, sem problemas para as parições.

c) de produção leiteira e mantegueira com registros em LE, bem destacados, os melhores para a raça, sem distinção de idade.

Se possível, tolerar menores produções para as vacas com três lactações, em LE, Reprodutoras Eméritas.

d) a produção de gordura deve estar sempre acima da média da raça.

2. Estabelecidas as exigências de tipo e produção, iniciar o relacionamento das fêmeas da raça que as preencham. É importante que este trabalho conte com a colaboração dos criadores, os quais devem estar cientes das vacas que compõem a lista das que forem eleitas.

Com isso haverá interesse em preservar os machos que nascerem. A propósito é sempre bom lembrar que a experiência em outros países mostrou que apenas 20% dos machos testados resultou melhoradores. É que nada impede que machos filhos de vacas com menor produção venham a superar os das campeãs.

A existência de uma lista de mães de reprodutores, sua divulgação, é material de publicidade e apoio aos seus proprietários na comercialização dos seus produtos.

3. Os pais dos reprodutores selecionados devem ser de alto nível e neste aspecto as ofertas de sêmen que existem no mercado facilitou estas escolhas. Não esquecer que no exterior o Teste de Progênie é realizado há quase três décadas e portanto o progresso alcançado é muito grande.

4. Os reprodutores para teste: os possuidores de indicações da mãe e do pai para serem testados devem ser de boa conformação, terem situações de registro perfeitamente em ordem e mostrarem vigor e boa saúde. Devem ser enviados para o teste a partir dos 10 meses. Entre os exames a que deverão ser submetidos estão os sanitários e o teste de paternidade, para evitar riscos de trocas.

5. Coletas - Para o teste se exige o total de 500 doses ou pouco mais que serão estocadas nas Centrais de Inseminação e de lá distribuídas para aplicação.

Mas os criadores podem, em casos que considerem especiais contratar a coleta e congelamento de maior quantidade de sêmen, a seu critério.

6. Após as coletas - Retornado o reprodutor há que se pensar em seu destino. Recria. Pensar que até a definição do teste vão se passar 5 anos! Se [illegible] melhorante, voltará para a [illegible] minação e para comercialização [illegible] sêmen.

Enquanto espera os 5 [illegible] o que fazer? É o problema [illegible] todos enfrentam, não vendendo [illegible] reprodutor escolhido e possível melhorador, outros fazendo [illegible] dades em seu uso, ou fazendo [illegible] coletas periódicas. Enfim são problemas que cada qual terá [illegible] enfrentar. Que tal fazer-se [illegible] pesquisa sobre a maneira como [illegible] conduzem criadores no exterior nestes casos?

**2ª. FASE:**

1. Distribuição do sêmen [illegible] sua aplicação

a) Divulgação - O sucesso [illegible] TP nesta fase vai depender [illegible] interesse que os criadores de [illegible] comum produtor de leite e [illegible] dores de vacas não registradas demonstrarem para o emprego [illegible] sêmen que lhes é oferecido.

Isto vai depender basicamente da divulgação que se [illegible] dos TP e principalmente da qualidade dos reprodutores doadores [illegible] sêmen.

Neste trabalho são partes interessadas não só os criadores [illegible] reprodutores como a indústria [illegible] laticínios que terá uma excelente oportunidade de contribuir para [illegible] aumento da produção e dos serviços de inseminação que terão com este programa de [illegible] oportunidade de expandirem [illegible] prática, começando com sêmen doado e depois com a venda [illegible]

sêmen de reprodutores melhoradores.

A Comissão de Seleção, deverá fornecer os elementos indispensáveis para esta divulgação.

b) O destino dado a cada dose de sêmen tem que ser seguido com o máximo cuidado, pois só assim se chegara aos resultados nos T.P..

Para isso importa que **cada reprodutor** em teste **receba uma letra e um numero** que o seguira até o final do teste, sendo a letra uma as letras designando a raça.

Cada Central de Inseminação, no momento da entrega do sêmen, **deverá** não só **registrar o nome e endereço do receptor**, como também cuidar para que se **obtenha o compromisso do criador** em não dispor dos produtos fêmeas que nascerem e se comprometa a inscreve-las em Controle Leiteiro. Nos casos de intermediários que irão retirar o sêmen será importante que cumpram esta exigências no momento oportuno.

De forma alguma se deverá entregar a um mesmo criador (não) **mais de 17 doses de sêmen de um reprodutor**. Isto é básico para que se tenha no teste final boa repetibilidade garantida pela distribuição das filhas em pelo menos 30 rebanhos.

c) A fim de contar com adequado controle da distribuição do sêmen a Comissão de Seleção devera registrar em computador o destino e as quantidades de sêmen distribuídos de cada reprodutor.

Por outro lado, devera conhecer por assentamentos, quantas doses cada criador recebeu e de que reprodutores.

Estas anotações sempre deverão ser acompanhadas da data em que ocorreram.

d) A Comissão de Seleção devera lembrar aos criadores que vão utilizar o sêmen de teste para que procedam as inseminações imediatamente após o recebimento, a fim de não atrasar os resultados finais do Teste de Progênie.

2. Nascimento, identificação das fêmeas para Controle Leiteiro

a) Os criadores que cuidaram da inseminação de suas vacas com sêmen de reprodutores em teste devem ser instruídos a **anotar a data de nascimento das filhas**. A seguir orientados a marcar, por tatuagem, anel ou outra maneira as fêmeas nascidas, com identificação do pai (letra e numero), trabalho esse que deve ser acompanhado quando possível pelo inseminador.

**Estes fatos**, nascimento e marcação **devem ser comunicados na época** à Associação de registro da raça do animal, para que seja considerada a identi-ficação no momento do controle leiteiro.

b) Dentro das possibilidades a Comissão de Seleção cuidará de inspecionar pelo menos parte das fêmeas nascidas filhas de reprodutores em teste a fim de conhecer sua conformação, grande e ou possíveis defeitos.

3. Coberturas e parição das filhas dos reprodutores em teste

a) O proprietário das fêmeas filhas de reprodutores em teste tem plena liberdade para escolher o reprodutor a utilizar na cobertura destas fêmeas. No entanto, esperando-se que o Teste de Progênie prossiga, nessa altura estarão novamente convidados a aplicar o sêmen de outros reprodutores em teste.

Tratando-se de fêmeas não registradas, não haverá necessidade de comunicar a inseminação, serão para controle do uso sêmen.

b) O momento seguinte de grande interesse para o Teste de Progênie é a da parição das filhas de reprodutores em teste. É a partir dessa data que deverão ser inscritas no Controle Leiteiro.

A Comissão de Seleção deverá estar atenta a estas datas e tomar contato com os criadores para que os controles sejam realizados logo.

**3ª FASE:**

Sempre que possível a Comissão de Seleção devera conferir as identificações apontadas no Controle Leiteiro com as que possue.

Foscálcio® Serrana
Líder absoluto de mercado
ÚNICO FOSFATO BICÁLCICO A CONQUISTAR A ISO 9000
Serrana Nutrição Animal
FONE: (011) 545-3124
CERTIFICADO ISO 9002 NBR-19002

# III - Estudos sobre o tema: Reprodutores Leiteiros

Dr. Fidelis Alves N
*Coordenador do PTI*

1- NOVA ETAPA NO S.C.L da ASSOCIAÇÃO PAULISTA DE CRIADORES DE BOVINOS (APCB) - CATEGORIA DE TOUROS PROVADOS - Ano XVII nº 202, Outubro de 1953 - Gado Holandês

2- PRIMEIRAS NOTÍCIAS SOBRE A CATEGORIA DE TOUROS PROVADOS NO SCL DA APCB Revista dos Criadores Ano XXX nº. 349 - Janeiro 1959

3- CLASSIFICAÇÃO DOS REPRODUTORES NO SCL - Revista dos Criadores, Ano XXX nº 349, Janeiro de 1959

4- APTO O SCL DA APCB PARA OS TESTES DE PROGÊNIE DE TOUROS - Revista dos Criadores Ano XXX Janeiro de 1959

5- IMPORTÂNCIA DO EMPREGO DE REPRODUTORES PROVADOS NO MELHORAMENTO DOS PLANTÉIS LEITEIROS - Fidelis Alves Neto e Fuad Naufel - Revista dos Criadores Ano XXXIII nº. 390 - Julho de 1962

6- IMPORTÂNCIA DO EMPREGO DE REPRODUTORES PROVADOS NO MELHORAMENTO DOS PLANTÉIS LEITEIROS II - RELAÇÃO DE TOUROS PROVADOS - Fidelis Alves Netto e Fuad Naufel - Revista dos Criadores Ano XXXIV nº. 401, Maio de 1963

7- TESTE PRELIMINAR DE PROGÊNIE DE REPRODUTORES LEITEIROS PARA TIPO E PRODUÇÃO - Revista dos Criadores, Ano XXXVI, nº. 432, Dezembro de 1965

8- RESULTADOS DOS TESTES DE PROGÊNIE DE REPRODUTORES COM FILHAS CUJA PRODUÇÃO LEITEIRA FOI CONTROLADA PELO SCL DA APCB - PERÍODO 1945 - 1967. Revista dos Criadores, Ano XL, nº. 471, M 1969

9- RESULTADOS DOS TESTES DE PROG BASEADOS EM LACTAÇÕES ENCERR EM 1968 - Revista dos Criadores, Ano XL Agosto de 1970

10- CONTROLE LEITEIRO - O QUE J FEITO E O QUE FALTA FAZER - Revis Criadores, Ano LVI. nº 678, Julho de 1986

11- COMO AUMENTAR A PRODUÇÃO LEITE NO BRASIL - INDISPENSÁ ORGANIZAR OS TESTES DE PROGÊNIE REPRODUTORES BOVINOS DE RA LEITEIRAS - Revista dos Criadores - Supl Junho de 1994

12- PROGRAMA DE TESTE DE PROGÊNIE BOVINOS DE RAÇAS LEITEIRAS - Revis Criadores, - Suplemento, Dezembro de (Publicações na Revista dos Criadores, - Supl Dezembro de 1994 (Publicações na Revista Holandes e Revista dos Criadores).


LUCRE PESADO

BALANÇA ELETRÔNICA PARA PESAR GADO

PESAGEM FÁCIL E RÁPIDA. CONTROLE TOTAL DO REBANHO

Aplicações: pesagem para abate, apartação de manada, programa de engorda, seleção de matrizes. Pode pesar também sacarias, sementes, rações, etc.

- Sem gradil. Você instala a balança em bretes existentes em sua fazenda
- Memória para 4.600 pesagens.
- Registra pesagem e quatro tipos de relatórios em tickets.
- Funciona com bateria própria (recarregável) ou de veículos, ou energia elétrica.
- Rede de Assistência Técnica Toledo.
- Comunica com PC através do software GLINK.

*Portátil*

Capacidade até 2.000 kg.
Pesa até 300 animais/hora.

TOLEDO
ALTA TECNOLOGIA EM PESAGEM

LIGUE JÁ. PEÇA FOLHETO OU MAIORES INFORMAÇÕES:
TOLEDO DO BRASIL INDÚSTRIA DE BALANÇAS LTDA.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| BELÉM, PA | TEL. (091) 233-4891 | FORTALEZA, CE | TEL. (085) 231-8728 | RIB. PRETO, SP | TEL. |
| B. HORIZONTE, MG | TEL. (031) 462-4868 | GOIÂNIA, GO | TEL. (062) 261-5791 | R. DE JANEIRO, RJ | TEL. |
| CAMPINAS, SP | TEL. (0192) 38-2133 | MANAUS, AM | TEL. (092) 234-6241 | SALVADOR, BA | TEL. |
| C. GRANDE, MS | TEL. (067) 741-1300 | P. ALEGRE, RS | TEL. (051) 337-2988 | S. J. CAMPOS, SP | TEL. |
| CURITIBA, PR | TEL. (041) 222-7422 | RECIFE, PE | TEL. (081) 339-4774 | SÃO PAULO, SP | TEL. |

MATRIZ: RUA DO MANIFESTO, 1183 - CEP 04209-901 - SÃO PAULO - SP - BRA

Estaremos presentes na EXPOGRANDE - I EXPOSIÇÃO INTERNACIONAL DO ZEBU DO MERCOSUL, em Campo Grande, MS, no estan ADAMES, nosso representante. De 1 a 9 de abril de 1995.
E com estande Toledo na 61ª EXPOZEBU - Exposição Nacional de Gado Zebu, em Uberaba, MG. De 25 de abril a 10 de maio de 1995.

# A ÁFRICA DO SUL INSPIRA A GENÉTICA DA MUNDO NOVO

*Ruy Bastos Freire Filho*
*Zootecnista*

*Como já sabiam os navegadores portugueses dos séculos XV e XVI, os caminhos entre a Índia e o Brasil tinham que passar necessariamente pela África do Sul. Para Fernando Penteado Cardoso, fundador da Manah S/A o atalho que vai transformar o zebuino da Índia no gado que o Brasil precisa, teria que passar por um sistema de melhoramento genético nos moldes praticados naquele país. O Bonsmara, a raça sintética aberta desenvolvida pelo legendário zootecnista sul africano J.Bonsma, reúne a adaptabilidade do zebu ao trópico ao desempenho econômico das raças inglesas de corte.*

## A BUSCA DO MELHOR DESEMPENHO EM CLIMA TROPICAL.

No final de 1994, o fundador da Manah S/A o engenheiro agrônomo Fernando Penteado Cardoso fez junto com seu filho Eduardo Penteado Cardoso, diretor técnico da Fazenda Mundo Novo de propriedade da Manah, uma viagem para conhecer o país que deu origem a filosofia de melhoramento genético que ele implantou em seu plantel Nelore: a África do Sul. O interesse de Dr. Cardoso pela Zootecnia daquele

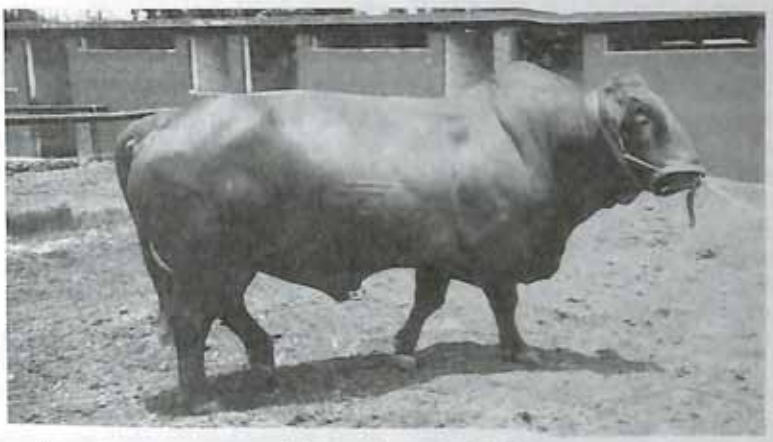

*Touro Bosmara na Central de Inseminação Artificial TAUPUS (África do Sul)*

Foscálcio® Serrana
Pureza Absoluta
ÚNICO FOSFATO BICÁLCICO A CONQUISTAR A ISO 9000
Serrana Nutrição Animal
FONE: (011) 545-3124
CERTIFICADO ISO 9002 NBR-19002

*Vaca Bonsmara com cria ao pé em Coromandel (África do Sul)*

pais vai fazer 60 anos. Na década de 30 ainda no inicio de sua carreira, extensionista na área de citricultura da Secretaria da Agricultura, Dr. Cardoso entrou em contato com propriedades de ingleses que eram consideradas as mais progressistas da época. Estas fazendas, localizadas em Pitangueiras e Caraguatatuba, em nosso estado, eram geridas por especialistas sul-africanos. "Fiquei entusiasmado com o trabalho desenvolvido pelos técnicos sul-africanos. Eles tinham uma filosofia bem pé-na-terra que eu achei bastante adequada para o Brasil" lembra o fundador da Manah. Este entusiasmo nunca passou. Quando em 1968 a Manah, estimulada pelos incentivos fiscais, criou um núcleo de melhoramento de gado de corte em Brotas (SP), para suprir touros para sua propriedade em Mato Grosso, seu enfoque zootécnico foi inspirado pelos sul-africanos. Era a busca por um animal economicamente eficiente em um ambiente desfavorável.

Hoje esta fazenda, a Mundo Novo, tem 3500 hectares de pastagens e abriga 4000 cabeças de gado Nelore, incluindo 1800 matrizes PO. Para formar a base de seu plantel a Manah foi buscar a linhagem Lemgruber, uma seleção iniciada por Manoel Lemgruber, em Friburgo (RJ), que destacava a habilidade materna das fêmeas. Foi a partir desta linhagem que a Mundo Novo iniciou seu trabalho de melhoramento genético. Este programa de melhoramento ganhou novo fôlego em 1982, quando a convite da Manah, o mais celebre zootecnista da época, o sul-africano Jan Bonsma, veio proferir uma série de palestras e orientar a seleção genética da Mundo Novo.

## A SELEÇÃO GENÉTICA SUL-AFRICANA

Os europeus ao colonizarem a África do Sul já encontraram um bovino zebu nativo e plenamente adaptado ao ambiente hos daquela região. Mas em cont partida estes animais deixavam desejar em seu desempen funcional. A partir de 1940, geneticista Jan Bonsma, q combinava sua extraordinár intuição com grande conhecimen cientifico, começa formar co base na experiência do Sa Gertrudis, uma raça sintét aberta que combinava a ada tabilidade do zebu local Africand com a eficiência produtiva d Hereford e a precocidade d Shorthorn. A contribuição fe nina era sempre do lado zebuí já que de acordo com Bonsm nenhuma mãe supera a fêmea zeb e a contribuição paterna era sempr do europeu dada a precocidade o maior libido dos taurinos.

Esta raça, o Bonsmara (B vem de Bonsma, em homenage a seu criador Mara é o nome d estação experimental onde f criada), que tinha inicialmente u proporção de 5/8 de sang zebuino para 3/8 de sangue taur hoje aproxima-se do meio sang que apresentou o melhor dese penho econômico. O Bonsma criado para explorar as regiõ inóspitas ao norte do pais, vem a poucos ganhando terreno por to a África do Sul, tendo inclus surpreendido seus criadores ao adaptar bem em regiões mais fr

Os critérios de seleção d Bonsmara são rigorosos. A co

*Touro Nguni malhado*

versão alimentar da raça e de 6:1 (6 kg de Matéria Seca de alimento para 1 kg de carne) com animais apresentando conversões inferiores a 5:1. Animais de acabamento tardio, isto é, aqueles que não apresentam peso próximo a 450kg e manta adequada de gordura ao redor de 2 anos, são rejeitados. Para as fêmeas os critérios são ainda mais rígidos. As vacas não podem apresentar duas falhas de parição em qualquer período de 3 anos, não devem parir bezerros muito grandes (mais de 40 kg), e o peso dos bezerros a desmama (em torno de 205 dias) deve estar em torno de 45% do peso da mãe. Vacas muito grandes são descartadas, pois foi observado uma correlação negativa entre tamanho e a fertilidade das fêmeas.

Em que pese o grande destaque dado aos aspectos econômicos do animal, hoje o Bonsmara é um rebanho morfologicamente homogêneo. Os animais são de cor cereja não se admitindo manchas brancas na cara. O tipo morfológico lembra bastante o primeiro cruzamento entre o taurino e o zebuino. "O que chama a atenção na seleção do Bonsmara" destaca o fundador da Manah " é a grande importância que se dá a seleção de fêmeas. A habilidade materna, fertilidade e a longevidade de uma vaca são qualidades sempre exaltadas. Os touros são selecionados pelo desempenho de suas mães, irmãs e filhas e não pelo desempenho de seus pais". Dr.

*Garrote Nguni vermelho*

Fernando Cardoso conta que, ao contrario do que ocorre no Brasil onde grande ênfase e dada aos machos, os criadores sul-africanos andam quilômetros para verem vacas "mães de touro". O desempenho destas vacas, que produzem 15 crias ao atingirem 17 anos é mesmo de animais excepcionais que aos 20 anos de idade produziram 17 filhos é o que vai pesar na genealogia dos futuros touros Bonsmara.

Para o Dr. Fernando esta ênfase dada ao desempenho de fêmeas ligadas aos touros tem uma lógica. "Na seleção leiteira quando queremos saber o potencial leiteiro de um touro. Esta é uma característica que não é expressada pelo touro, temos que avaliar pela produção de suas filhas, irmã, mães etc. ressalta o consultor "quando queremos saber as qualidades femininas (habilidade materna, fertilidade etc.) de um touro de corte não podemos medi-las diretamente no animal. Podemos medir diretamente ganho de peso, taxa de conversão alimentar etc. Para saber seus atributos "femininos" temos que colher informações das fêmeas relacionadas a ele"

Para o agrônomo Eduardo Cardoso Penteado, diretor técnico da Fazenda Mundo Novo que acompanhou seu pai na viagem, a eficiência econômica do gado de corte esta fortemente relacionada ao desempenho das matrizes, o que justifica a seu ver a grande ênfase dada a estas características no gado

Foscálcio® Serrana
Componente essencial de rações e suplementos minerais
ÚNICO FOSFATO BICÁLCICO A CONQUISTAR A ISO 9000
Serrana Nutrição Animal
FONE: (011) 545-3124
CERTIFICADO ISO 9002 NBR-19002

Bonsmara. Eduardo ressaltou ainda as provas de conversão alimentar dos machos candidatos a reprodutores. Na realidade é uma Prova de Ganho de Peso aonde se controla, além do ganho de peso, a quantidade de alimento ingerida pelo animal. Isto evita favorecer garrotes que apresentem bons desempenhos em função apenas de um maior consumo, selecionado aqueles que usam o alimento de forma mais eficiente. O diretor técnico da Mundo Novo planeja comprar os equipamentos e o modelo do computador usados nestes testes para avaliar o desempenho alimentar dos tourinhos selecionados na Mundo Novo, e eventualmente, prestar este serviço a terceiros.

" O trabalho de seleção sul-africano é extremamente rigoroso" adverte o agrônomo. "Existem claúsulas contratuais entre os criadores e os centros que fazem os testes de desempenho, que asseguram que os animais que tiverem uma má performance seguem diretamente para o abate, evitando assim a difusão de genes inferiores pelo rebanho" .

Eduardo nega que exista qualquer interesse por parte da Mundo Novo em adquirir animais sul-africanos. Devido a uma série de barreiras de ordem sanitária, o intercâmbio de material vivo entre os dois países é quase impossível. Ele ressalta no entanto que aos poucos o Bonsmara está saindo da África do Sul. Embriões da raça já foram importados pelo Canadá, que provavelmente pretende depois difundir a raça por outros países. Recentemente a Argentina começou também a se preparar para importar embriões Bonsmara, para explorar as pastagens nativas de baixa qualidade de suas províncias setentrionais.

## OS CAMINHOS DO ZEBU

Segundo um técnico sul-africano citado pelos diretores da Mundo Novo, Dr. N. D. Nel, as raças nativas representam "uma riqueza incalculável pois podem ser melhoradas sem prejuízo de sua notável adaptação ambiental". Para os sul-africanos o **Bos indicus** tolera o calor, repele os carrapatos e apresentam resistência a moléstias e parasitas tropicais. Por esta razão existe um trabalho de melhoramento das raças nativas, como a raça Nguni originaria da África central, deve ter em torno de 10.000 anos de existência.

A raça Nguni é longeva e extremamente prolífica. Algumas fêmeas chegam a desmamar 21 crias aos 23 anos de idade. Outro aspecto importante do Nguni e sua adaptação metabólica a baixos teores de nitrogenio na forragem, usando o excedente que acumula no corpo durante os períodos onde existe fartura deste elemento apresentando uma maior adaptação ao período seco. A política sul-africana é melhorar e preservar o germoplasma nativo, para uma eventual difusão destes genes em programas de melhoramento.

Para Eduardo Cardoso um dos contrastes entre o Brasil e a África do Sul que mais chamou a sua atenção foi a ausência da competição entre criadores. Nas exposições de gado, os animais não são levados a julgamento de exterior. É a Sociedade de Criadores de Gado Bonsmara que escolhe os animais a serem exibidos para o grande público em exposições. Com a inexistência da figura do juiz a apreciação dos animais é feita pelos próprios criadores treinados pela Sociedade, em um sistema de rodízio. Isto ajuda a ter uma maior cooperação dos associados no melhoramento da raça.

A Mundo Novo partici recentemente da exposição Uberaba. Mas não levou s animais para a pista. A intenção apenas mostrar o resultado de trabalho. Dr. Fernando Cardos bastante reticente com os rumos melhoramento do gado Nelore Brasil. "Existe um fascínio co vaca grande. Elas são via de re animais subferteis" lamenta Fernando " além do mais se vaca de 700 Kgs desmamar bezerro com 200 Kgs, exatame como uma vaca que pesa 450 K gatamos menos alimento co vaca mais leve. Mas está have uma tendência preocupante em só aumentar o tamanho da v como também o peso ao nasce bezerro".

Para o fundador da Ma esta tendência de se levar o Nel a parecer um Charoles pode s detrimental para a raça. Na Af do Sul, bezerros que nasçem c mais de 40 Kgs são desqualific para o melhoramento. O moti que bezerros grandes levam c mais frequência a partos difíce a possível vantagem de um m peso inicial desaparece no dec do período de crescimento. P outro lado, o modismo de bezer com mais de 50 Kgs que v surgindo no Nelore não é seg fruto de seleção. Geralmente es animais são gestados em re toras holandesas e girolandas. P o Dr. Fernando Cardoso e artificialismo no sistema de cri do Nelore pode levar a um an que acabe por se "desmanch quando criado a campo. Por is ele insiste que a seleção na faze Mundo Novo siga critérios se lhantes aos do sul-africanos. U gado que resista ao ambiente pical e responda as necessida econômicas da grande maioria criadores brasileiros.

# CONTROLE ESTRATÉGICO DA VERMINOSE EM GADO DE CORTE

*MICHAEL R.HONER 1*
*IVO BIANCHIN 2*

Verminose é o termo popular para um complexo de distúrbios fisiológicos causado pelos nematódeos gastrintestinais, os quais ocorrem no trato digestivo dos bovinos (Quadro 1). Os nematódeos podem ocorrer em outras partes do corpo bovino, por exemplo, nos olhos, na pele e nos pulmões, mas as espécies gastrintestinais são, sem duvida, de maior importância econômica para o gado de corte no Brasil.

O gênero mais comum, **Cooperia**, com três espécies: **c.punctata** (a mais comum), **c.pectinata** e **c.spatulata**, ocorre em 75% dos bovinos. Em seguida vem o gênero **Haemonchus**, em aproximadamente 15% dos animais, com duas esécies, **H.contortus** (a mais comum) e **H.similis**. O gênero **Trichostrongylus** ocorre também com duas espécies, **T.axei** em 7%, e **T.longispicularis** em menos de 1% dos bovinos. Uma espécie importante é a **Oesophagostomum radiatum**, a qual se encontra em mais ou menos 3% dos bovinos; pode-se encontrar também, em números baixos, as espécies **Trichuris discolor** e **Bunostomum phlebotomum**.

Quadro 1 Principais gêneros/espécies de nematódeos gastrintestinais em bovinos no Brasil.

| Gênero/espécies | Localização |
|---|---|
| **Haemonchus contortus**<br>**H. similis**<br>**Trichostrongylus axei**<br>**Osteragia lyrata**<br>**Ostertagi** | Abomaso |
| **Cooperia punctata**<br>**C. pectinata**<br>**C. spatulata**<br>**Trichostrongylus longispicularis** | Intestino delgado |
| **Oesophagostomum radiatum**<br>**Trichuris spp.**<br>**Bunostomum phlebotomum** | Intestino grosso |

Fonte: Honer (1991), Honer & Bressan (1992)

Em certas regiões do Pais ocorre um outro gênero de grande importância local: **Ostertagia**, com duas ou três espécies. Este gênero é de áreas frias e/ou altas, como na região Sul, mas pode ser encontrada até nos lugares altos e mais frios de Minas Gerais.

Em geral, estes parasitos são pequenos e finos, sendo necessário um microscópio para estudar detalhes da sua morfologia, embora algumas espécies maiores possam ser identificadas a olho nu. Deve-se enfatizar que as infecções nos bovinos quase sempre são misturas concomitantes de diversas espécies em diferentes regiões do trato digestivo. Por isto, os problemas causados pelos nematódeos gastrintestinais são de natureza muito complexa é pelo menos em parte, ainda não esclarecidos, sendo assunto de pesquisa em diversas instituições.

*Em geral, estes parasitos são pequenos e finos, sendo necessário um microscópio para estudar detalhes de sua morfologia, embora algumas expécies maiores possasm ser identificadas a olho nú*

## Redução no desempenho produtivo dos bovinos

Simplificando, pode-se dizer que o efeito generalizado da verminose é uma redução significativa no desempenho produtivo do bovino. Os nematódeos são

(1) Epidemiologista, P.h.d., EMBRAPA - Centro Nacional de Pesquisa de Gado de Corte (C.N.P.G.C.) Caixa Postal, 154, 79002-970, Campo Grande, MS
(2) Med. Vet. P.h.d., CRMV - MS nº 0051, EMBRAPA CNPGC

*Os nematódeos adultos dentro do trato digestivo, produzem ovos os quais são eliminados com as fezes e se desenvolvem nas massa fecais nas pastagens. Destas massas saem larvas infectantes, as quais, quando ingeridas com a vegetação, se desenvolvem, tornado-se parasitos adultos*

importantes, pois causam grandes perdas na produção do rebanho nacional a cada ano. Embora no Sul do Pais a taxa de mortalidade em animais jovens, devido à verminose, possa chegar ate 10%, em geral não é a mortalidade que caracteriza estas infecções, mas sim a queda no nível de desempenho.

Estes parasitos, como adultos dentro do trato digestivo, produzem ovos, os quais são eliminados com as fezes e se desenvolvem nas massas fecais nas pastagens. Destas massas saem larvas infectantes, as quais, quando ingeridas com a vegetação, se desenvolvem, tornando-se parasitos adultos.

Hoje, sabe-se muito, não só sobre a ocorrência, fisiologia, morfologia e biologia dos nematódeos, mas também sobre o seu controle. Alem disso, atualmente, o criador dispõe de diversos produtos anti-helmínticos altamente efetivos, e de pouca, ou nenhuma, toxicidade. Por que então estes pequenos vermes ainda são de tanta importância para a produção de carne ?

Os nematódeos existem, como já foi dito, em duas populações, uma nas pastagens e a outra nos seus hospedeiros. Estas populações possuem dinâmicas populacionais próprias, as quais podem ser modificadas por diversos fatores, tais como, as condições climáticas de curto e médio prazo, o manejo dos bovinos, ou a constituição genética dos parasitos e dos bovinos.

## Desenvolvimento do Programa Estratégico

Por isto, em primeiro lugar, é imprescindível estudar e conhecer esta dinâmica, para poder aplicar as ações de controle precisamente nas épocas mais críticas para os parasitos, dentro de um **programa de controle estratégico**. Usa-se a palavra "**estratégico**" no sentido de programa pré-estabelecido, o q tem que ser feito todos os an pois a pesquisa já identific (preconizou) os momentos m propícios para os tratamentos.

A elaboração de programa estratégico de contr envolve a identificação da épo mais crítica para os nematódeos a concentração das ações contra parasitos neste período.No Bra em geral, a época mais crítica pa as larvas infectantes dos nem tódeos nas pastagens coinci exatamente com a de ma escassez de alimentação para bovinos - **a época seca.**

Durante o período chuvos existem muitas larvas infectant na pastagem, e as condições pa sua sobrevivência são favorável Neste período, os bovinos est sendo infectado continuamente, também contaminando continu mente a pastagem com suas fez as quais contem os ovos d nematódeos. Nestas circuns tâncias, qualquer controle d verminose a campo, torna-s inviável, pois este processo circul de infecção/contaminação é in terrupto. Por outro lado, estud epidemiológicos feitos dura diversos anos demonstraram qu durante o período seco, as larv enfrentam dificuldades em sobr viver nas pastagens e infectar os bovinos. Assim sendo, a mai reserva de parasitos encontra-se neste período, dentro dos bovino e, portanto, acessível as ações d controle.

Foi assim que o Cent Nacional de Pesquisa de Gado d Corte (CNPGC), da Empres Brasileira de Pesquisa Agro pecuária (EMBRAPA), dese volveu, depois de diversos anos d estudos e experimentos, o pro grama nacional de contro estratégico dos nematódeos e bovinos de corte. A finalidad deste programa é de "encaixar", e período seco, três tratamentos, u procedimento que a pesquisa ide tificou como sendo o mais eficaz e com retorno econômico mai

*Durante o período seco, as larvas enfrentam dificuldades em sobreviver nas pastagens e infectar os bovinos.*

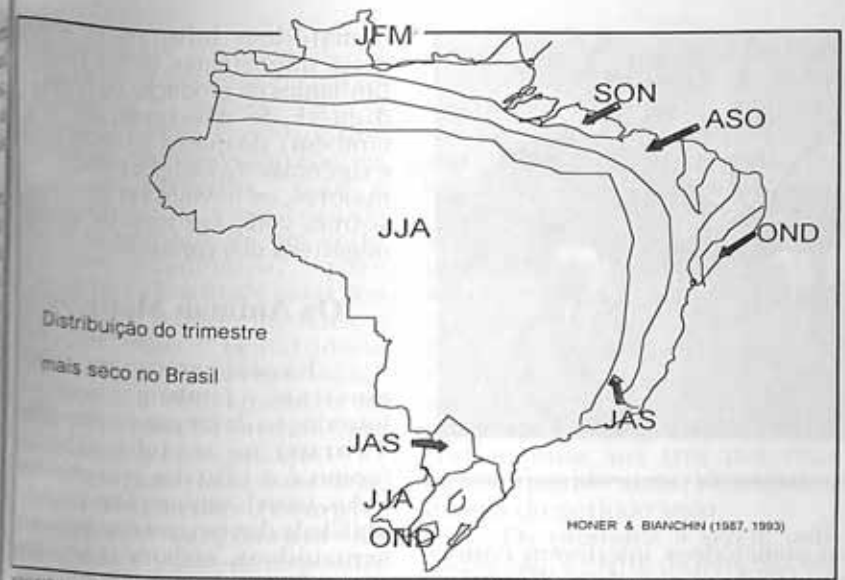


*FIGURA 1. Representação da distribuição de época seca no Brasil. Em 65% do território nacional, os três meses mais secos são junho, julho e agosto (JJA) e este padrão muda no sentido norte e leste. Identificando estes três meses (OND = outubro, novembro e dezembro, por exemplo), é possível elaborar um esquema estratégico racional de controle para a região, incorporando os três tratamentos básicos (antes, no meio e depois da época seca.*

(Bianchin et al., 1993).

Já que em aproximadamente 65% do território nacional o trimestre mais seco é durante os meses de junho, julho e agosto, o programa de controle estratégico em grande parte do País preconiza tratamentos em **maio, julho e setembro**. Conhecendo os três meses mais secos em todo o País (Figura 1), é possível identificar os meses de tratamentos, os quais serão sempre antes, na metade e depois do período seco. Mais precisamente, o primeiro tratamento é no mes de transição entre chuva e seca, o segundo no meio da seca e o terceiro no mes de transição entre seca e chuva.

Existem regiões no Brasil, onde não se pode identificar períodos "chuvosos" ou "secos" tão claramente, como é o caso da região Sul, onde esquemas especiais foram desenvolvidos. No entanto, a maior parte do rebanho nacional de gado de corte está localizada na área onde os tratamentos devem ser aplicados em maio, julho e setembro.

Estes tratamentos, para animais entre o desmame e 36 meses de idade, proporcionam um retorno econômico significativo. Outras épocas de tratamento ou outras categorias de animais mostram um retorno somente em condições especiais.

Este é um dos fatores mais importantes em relação às perdas econômicas atuais devido aos nematódeos, pois muitos produtores não estão tratando as categorias de animais mais apropriadas, ou nas épocas indicadas no programa estratégico. Por isso, estão investindo recursos, e não recebendo em troca o retorno, que os modernos produtos anti-helmínticos podem proporcionar, quando utilizados corretamente. Este retorno, dentro de um programa estratégico, e a longo prazo, isto é, de diversos anos, pois resulta na descontaminação das pastagens, diminuindo as populações de larvas a cada ano. Por isso, deixar de aplicar o programa em um ano quando, aparentemente, os animais estão sadios, não é correto, e causará prejuízos em anos posteriores, pois permitirá um aumento na contaminação das pastagens por larvas infectantes.

## É inevitável a Implantação do Programa Estratégico?

A sobrevivência de formas infectantes depende principalmente das condições ambientais: chuva, temperatura, manejo, tipos de pastagens etc. Por exemplo, uma pastagem melhorada, com maior disponibilidade de forragem, mais densa, ou em condições de umidade e temperaturas relativamente altas, pode proporcionar uma sobrevivência prolongada das larvas infectantes, enquanto uma pastagem com baixa disponibilidade, rente ao solo, pode expor as larvas aos raios ultravioletas, causando uma mortalidade considerável. Mas, com certeza, o que o criador quer é exatamente uma pastagem com uma vegetação exuberante e densa, o que permitirá aumentar a taxa de lotação, e diminuir o tempo de pastejo. Posto isso, o criador deve aceitar a inevitabilidade da implantação de um programa racional de controle da verminose bovina na propriedade.

Além do controle dos nematódeos com produtos químicos, há um outro aspecto importante de ser mencionado: associado ao tratamento químico, haveria necessidade de se eliminar as massas fecais das pastagens evitando-se assim, uma contaminação, uma vez que ovos e larvas dependem das fezes para seu desenvolvimento e sobrevivência. Este procedimento é certamente inviável para criações extensivas, embora em certas

*É possível identificar os meses de tratamento, os quais serão sempre antes, na metade e depois do período mais seco. Mais precisamente, o primeiro é o mes de transição entre chuva e seca, o segundo no meio da seca e o terceiro no mes de transição entre seca e chuva.*

*Há um resultado imediato; a diferença de peso vivo entre animais tratados e não-tratados para verminose, pode chegar a 40 kg ou mais*

circunstâncias, nos haras, por exemplo, possa ser enexequível. O mesmo problema, o da remoção de massas fecais bovinas, foi muito grave na Austrália, na década de cinqüenta, quando 1/4 da área total de pastejo era coberto com massas fecais secas. A solução encontrada foi a da importação de besouros africanos capazes de destruir estas fezes, incorporando a matéria orgânica (nitrogênio) no solo. Esta solução existe também no Brasil, desde que o CNPGC importou o besouro africano **Onthophagus gazella** como componente integral do programa nacional de controle da mosca-dos-chifres. A introdução deste besouro na propriedade diminui visivelmente o número de massa fecais que permanecem nas pastagens. Portanto, as condições para o desenvolvimento e sobrevivência de diversos parasitos também ficaram reduzidas.

Além do resultado a longo prazo o resultado da diminuição contínua da contaminação das pastagens, há um resultado imediato; a diferença em peso vivo entre animais tratados e não-tratados para verminose, pode chegar a 40 kg, ou mais. Com isto, os animais permanecem menos tempo nas pastagens para chegar ao peso final desejado para sua categoria.

Isto se deve ao fato de que os nematódeos interferem com o aproveitamento dos alimentos ingeridos, e como já foi dito, isto resulta em uma queda no desempenho dos bovinos. Quando isto ocorre durante o período seco, exatamente quando a alimentação disponível é de menor quantidade e qualidade, o efeito dos parasitas é exacerbado. Por isso, faz-se necessário tratar os animais. Por outro lado, quando as condições climáticas, ou o tipo de manejo, ou de pastagem, favorece os parasitas, há **também** necessidade de tratar os animais.

Um estudo crítico feito recentemente no CNPGC, mostra que, se imaginarmos os últimos 60 anos na região de Campo Grandes, MS, como sendo um período de produção de carne em que ocorreram as condições atuais de manejo, teria sido necessário aplicar o esquema estratégico **todos os anos**, e que diversas vezes, as condições ambientais foram tão favoráveis aos parasitos, que teria sido necessário incluir pelo menos um tratamento a mais neste esquema.

Realmente, o criador não escapa da necessidade de controlar as populações de nematódeos no seu rebanho. Pode-se dizer que, apesar de todos os avanços na quimioterapia depois da década de sessenta, quando já se celebrava o fim das verminoses em geral, os nematódeos tornaram-se ai mais importantes como fat limitantes da produção de car diga-se de passagem, de l também), do que há 30 anos. C exigências fisiológicas cada maiores, os bovinos em produ sofrem cada vez mais os efe negativos dos parasitos.

## Os Animais Mestiços

Experimentos recen mostram também, que introdução de sangue taurino (B **Taurus**) no rebanho zebu (como é o caso dos cruzamen indus-triais), vai aumentar a susc tibilidade dos bovinos mestiços a nematódeos, embora talvez e grau menor do que no caso d carrapato, onde as medidas d melhoramento do rebanho, ou d pastagens, tem efeitos negativ marcantes, e preocupantes para futuro.

## A Resistência aos Anti-helmínticos

Não existe nenhuma ev dência no Brasil, em nível d campo, da ocorrência de resis tência entre os nematodeos d bovinos, aos antihelmínticos. N entanto, a resistência já é conhecid e acentuada em outros anim domésticos como, por exemplo caprinos, ovinos e equinos. alguns casos de resistência em bovinos são conhecidos, na Europa, por exemplo. Por isso, um outro aspecto importante de um esquema estratégico de controle dos nematódeos de bovinos tem que ser o **uso mínimo racional** de todos os produtos químicos, para evitar, ou pelo menos diminuir:
1) resíduos de produtos químicos na carne, tanto quanto possível;
2) a poluição do ambiente, e
3) a seleção de cepas resistentes dos parasitos.

É imprescindível enfatizar este último ponto: se surgirem, no futuro, cepas resistentes dos nematódeos de bovinos, serão

extremamente complexo, e dispendioso, o desenvolvimento de alternativas de manejo para a produção de carne. É verdade que o esquema estratégico não elimina todos os parasitos, mas é necessário aceitar a presença de alguns e, portanto, de um certo prejuízo econômico, para salvaguardar a efetividade geral dos produtos. Se isto não for feito, a situação dos nematódeos gastrintestinais dos bovinos vai ser semelhante a dos carrapatos na Austrália - não há medida que possa controlar este parasito.

A pergunta, frenquente hoje: "**É possível evitar (completamente) o surgimento da resistência ?**", deve-se responder honestamente: "**Não**". Sabe-se que, atualmente, em todos os grupos de parasitos, das plantas, dos animais ou do homem, estão aparecendo diversos tipos de resistência contra os produtos químicos utilizados no seu controle, incluindo produtos de origem biológica, como as toxinas derivadas da bactéria **Bacillus thuringensis**. Qualquer organismo vai apresentar uma reação contra qualquer método de controle, para evitar os seus efeitos nocivos. O que é imprescindível agora, é adotar medidas racionais para prolongar, tanto quanto possível, a vida útil de produtos eficazes, atualmente disponíveis no mercado. Na visão atual, então, os nematódeos gastrintestinais devem ser combatidos utilizando o programa estratégico, limitando os tratamentos aos três descritos anteriormente: antes, na metade e depois do período seco.

Os produtos a serem utilizados são, é claro, de livre escolha do criador e de seu veterinário, mas será importante pensar em incluir no esquema um produto de amplo espectro, por exemplo, um dos endectocidas para o tratamento de setembro. Isto porque a categoria de produto possui efeitos não sómente contra os vermes, mas adicionalmente contra outros tipos de parasito (tais como carrapato, berne, etc.), os quais também vão aparecer neste começo do período chuvoso.


**REFERÊNCIAS BIBLIOGRÁFICAS**

*BIANCHIN, I.; HONER, M.R.; NUNES, S.G.;NASCIMENTO, Y.A.do; CURVO J.B.E.; COSTA, F.P* Epidemiologia dos nematódeos gastrintestinais em bovinos de corte nos cerrados e o controle estratégico no Brasil. Campo Grande: EMBRAPA-CNPGC, 1993. 120p. (EMBRAPA-CNPGC. Circular Técnica, 24).

*HONER, M.R.*; Relatório da I Reunião sobre Epidemiologia de Nematódeos de Bovinos no Brasil. Revista brasileira de Parasitologia Veterinária, v.1, p.5-7, 1991.

*HONER, M.R.; BRESSAN, M.C.R.V.* Nematodeos de bovinos no Brasil: o estado da pesquisa, 1991. Revista Brasileira de Parasitologia Veterinária, v.1, p.67-79, 1992.


## Em Resumo

**Resumindo, pode-se dizer que é necessário tratar os bovinos todos os anos dentro do esquema estratégico, com os três tratamentos preconizados, introduzir o *besouro africano* na propriedade e, em comum acordo com o veterinário, ficar atento as condições climáticas, para ver se é necessário, ou não, aplicar um bom vermífugo mais do que estas três vezes. Espera-se que, no futuro a EMBRAPA possa ser útil em dar este aviso sobre tratamentos fora do esquema estratégico, com um sistema de previsão. Por enquanto, é necessário ficar com olhos abertos, pois os nematódeos não dão, e nunca darão, trégua.**


+ LEITE

Pardo Suíço

FAZENDA SÃO JOÃO

+ CARNE

Arthur Whitaker Carvalho

TOURINHOS - REPRODUTORES - MATRIZES PO - venda permanente

Inseminação Artificial e Transferência de Embriões com touros importados. Controle Leiteiro Oficial pela ABC

Rebanho premiado em Exposições: Nacional, Estadual, e Regionais.

Tel.: (011) 284.2907 - Fax: (011) 820.2008 - Via Castelo Branco - Tatuí

# Fazenda Cachoeira

***Onde a procura por produtividade,ou seja, um gado mais jovem e mais pesado para abate é uma constante sob direção da empresária: Regina Marchesi***

*Entrada da Fazenda Cachoeira já demonstra o capricho da proprietária*

A Fazenda Cachoeira está situada no Norte velho de Jacarézinho no Estado do Paraná, região composta de 20 municípios, dentre eles Bandeirantes e Cornélio Procópio. É formada, como é comum naquela região por terra roxa, ingrediente básico de primeira qualidade, fundamental na receita da alta produtividade.

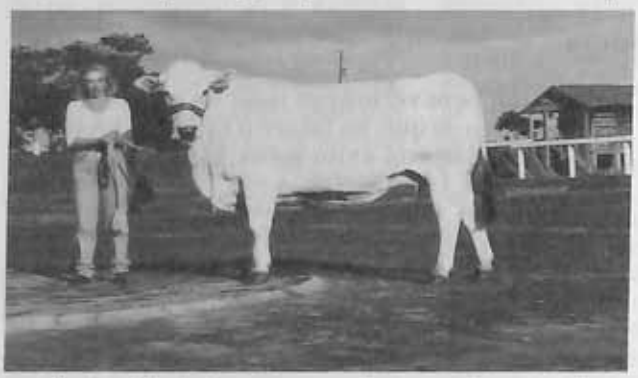

*Regina Marchesi com uma exelente matriz em terreiro de café desativado*

A principio grande produtora de café, a fazenda chegou a produzir 100 sacas de café por ha, utilizando todo o potencial de seus solos.

Porém no ano de 1975 a grande geada destruiu os cafezais de toda a região, levando a família Marchesi a decisão de erradicar os cafezais e investir na lavoura de grãos, trigo e soja, e a criação de gado de corte, Nelore, oriundos de tradicionais criatórios, demonstrando a preocupação da Cachoeira com qualidade e produtividade.

Passados 10 anos do grande desastre das lavouras cafeeiras assumiu, em 1982, a administração das fazendas a jovem empresária Regina Marchesi Silva, com a determinação e o bom senso que o sangue portugues e italiano proporcionou-lhe, decidida a transformar aquelas terras no melhor cento de produção de grãos e de gado daquela região.

Utilizando as melhores tecnicas agronômicas, Regina, obteve durante vários anos índices de produtividade acima da média Nacional, o que não viabilizava a atividade agrícola da Cachoeira

| Rentabilidade das últimas safras | | |
|---|---|---|
| Produto | Kg/ha | Ano |
| Café | 6.000 | 1974 |
| Trigo | 2620 | 1993 |
| Soja | 2975 | 1993 |
| Milho | 8200 | 1993 |
| Boi gordo | 600 | 1994 |

primeiro pelo alto risco da atividade, em função das geadas, segundo pelo elevado custo do crédito rural, que utilizou, e pagou na sua totalidade muitas vezes tendo que utilizar recursos não oriundos da atividade agrícola.

Em 1986 a atividade pecuária era secundária, utilizando áreas que não eram próprias para a agricultura, e mesmo assim cada ano supria as necessidades financeiras da fazenda, inclusive os deficits da produção agrícola.

O desestímulo com a agricultura levou a iniciar um trabalho de aprimoramento do rebanho, adquirindo animais

*Conjunto de vacas Marchigina PO*

lto padrão e otencial genético m várias regiões do rasil, principal- ente na região de raçatuba.

O rebanho, asicamente Nelore, ue pastava em apim colonião,em erras roxas, antes cupa-das pelo café lavouras, alcan- avam mais de dois metros de ltura, demonstrando que não proveitavam todo o patencial das astagens, nem produziam as rrobas que poderiam. Iniciou-se busca por um complemento racial ue possibilitaria um maior ndimento de arrobas de carne por ês em regime de pasto.

Orientada pelos melhores cnicos e pecuaristas, Regina otou pela raça Marchigiana, da al adquiriu o primeiro exemplar m leilão, na cidade de Bauru (SP).

Após um ano de experiências om a raça Marchigiana, cruzando om as matrizes Nelore, o resulado i encorajador, os bezerros mais bustos, vigorosos e pesados, varam a Cachoeira a utilizar todo seu potencial em cruzados de Marchigiana.

| O Rebanho - Fruto da Eficiência | | | |
|---|---|---|---|
| Categoria | Nelore Geral | Marchigiana PO | Marchigiana ½ Sangue |
| Touros | 3 | 12 | |
| Matrizes | 557 | 25 | 124 |
| Novilhas | 76 | 45 | 64 |
| Novilhos | 657 | 14 | 466 |
| Bezerros | 67 | 27 | 131 |
| Bezerras | 59 | 15 | 109 |

Sem descuidar da base Nelore do seu rebanho, sempre incorporando os melhores reprodutores e matrizes, Regina Marchesi, iniciou em 1990 um programa de Transferência de Embriões no rebanho Nelore e Marchigiana, com produtos dos selecionadores Fabio Pedriali, Israel Sverner, Garcia Molina e Mauricio Blay, com o objetivo de produzir touros Marchigiana de alta produtividade para servir as 900 matrizes Nelore que compunham o seu rebanho de corte. Além de iniciar o trabalho de formação do Marchigiana da Cachoeira, com a determinação de que ele conquistaria as melhores posições, em qualidade e produtividade no cria-tório Nacional.

A confimação chegou bem antes do esperado, quando em 1994 uma fêmea que já vinha chamando atenção desde 1991, conquistou o 1º premio na Exposição de Paranavaí, Gioconda da Cachoeira, filha de Ativa da Quatro Irmãos e Átomo, colecionando prêmios em todas as exposições em que participava, e, durante a Nacional em Araçatuba se sagrou a Grande Campeã da Raça Marchigiana. Mais que uma premiação, foi a confirmação de

*Rebanho de gado Nelore com bezerros 1/2 sangue Marhigiana*

*Matrizes Marchigiana PO com bezerros ao pé*

um trabalho sério que com despreendimento e dedicação foi coroado de exito.

E foi seguindo o seu trabalho de difusão não apenas da Raça como também da importância de fazer e produzir o melhor, Regina abriu mão de Gioconda da Cachoeira no Leilão Master/95 para o pecuarista João Prospero Carvalho Grisi, que iniciou em 1994 a criação de Marchigiana. Além disto participa ativamente do projeto 500 da Associação Brasileira de Criadores de Marchigiana que consiste em disponibilizar fêmeas com bezerro ao pé para comercilizações em condições facilitadas(1+4 vezes), objetivando o aumento da produção de tourinhos para cruzamento a campo, e, participa anualmente da Exposição Agropecuária da cidade de Ibati-PR incentivando a criação de Marchigiana na região.

Com 1.000 ha de pastagens, antes colonião, hoje Brizantha e Coast-Cros, implantadas obedecendo a um rigoroso programa de

| Indíces Pecuários | | |
|---|---|---|
| Indice | Média Nacional | Fazenda Cachoeira |
| Natalidade | 65,0% | 95% |
| Mortalidade dos bezerros | 6,0% | 1% |
| Idade de abate (480 kg/p.v.) | 48 meses | 24/30 meses |
| Intervalo entre partos | 18 meses | 12/13 meses |

reforma anual, utilizando as melhores técnicas, com consultoria permanente de agrônomos especializados em pastagens, e, um manejo altamente eficient Cachoeira produz 1,3 arrobas hectare ano além de 80 animais que são comercilazados na re e nos mais importantes leilões raça.

**Manejo - é fundamental faz o melhor.**

"A nossa maior pr cupação sempre foi e será utili as melhores técnicas de mane com o objetivo de produzir ma melhor" afirma Regina.

**Alimentação**

Pastos de Brachiaria B zantha, Colonião Coast-Cross, implan tados com as ad quadas tecnica ag colas, principalmen adubação(NPK) calagem quando ne cessário.

Silage de milho - milh produzido na Cach eira(30 t/ano) concentrado disponibilizado pa matrizes Marchigiana com be zerros ao pé e para todos os be zerros puros a partir de 20 dias d

*Vaca Nelore amamentado bezerro Marchigiana de TE*

*A maior preocupação de Regina é a de utilizar as melhores tecnicas de manejo para produzir mais e melhor*

idade(Clipper)

**Mineralização**

(Sal Mineral CVA) formulação específica para a Cachoeira, é fornnecido a vontade para o gado.

**Sanidade**

Vacinação de febre aftosa é feita respeitando sempre a datas de campanha, os animais são desvermifugados logo nas primeiras semanas de vida e em seguida3 a 4 vezes por ano; as fêmeas são vacinadas contra brucelose; todos os animais são vacinados contra carbunculo no 3º mes e 5º mes de nascido e depois anualmente; são aplicados carrapaticidas sempre que necessários.

**Reprodução**

Das 557 matrizes que compõe o rebanho da Cachoeira 400 são servidas por inseminação artificial com semen de reprodutores Marchigiana e 157 inseminados com semem de reprodutor Nelore (Manutenção do rebanho básico).

Nos lotes aonde é usada a Inseminação artificial o repasse de Touros Marchigiana é obrigatório.

**Controle de Desenvolvimento Ponderal**

| Tipo | | 205 dias | 365 dias | 550 dias | G/DIA/Kg |
|---|---|---|---|---|---|
| Marchigiana PO | macho | 270 | 410 | 550 | 0,935 |
| Marchigiana PO | fêmea | 250 | 324 | 428 | 0,708 |


Vacine seus animais e informe a Casa da Agricultura. Evite multas.

AFTOSA nunca mais.

VACINE SEU REBANHO.

Colaboração da **Revista dos Criadores**

**SEMENTES:**

MILHO HÍBRIDO
MILHO FORRAGEIRO BR-126
CAPIM TANZÂNIA
BRACHIÁRIA BRIZANTHA
SORGO FORRAGEIRO
ALFAFA CRIOULA

**SELEGRAM**

FONE: SÃO PAULO (011) 826.3033
FAX.:SÃO PAULO (011) 826.3911
FONE: SANTO ANASTÁCIO (0182) 61.1728
FAX: SANTO ANASTÁCIO (0182) 61.1163

# ALFAFA

## COMPORTAMENTO DA CULTURA ESTABELECIMENTO E EVOLUÇÃO

*Eldo Lauro Berger*
*Técnico Agropecuário Coop. Batavo Depto de Fomento*

A alfafa, por ser uma forrageira nobre, devido as suas excelentes qualidades nutricionais - rica em proteínas, vitaminas e sais minerais - necessita de um perfeito equilíbrio entre os nutrientes de solo. Por consequência, a maioria dos casos de insucessos estão relacionados ao manejo inadequado da área por ocasião da implantação e/ou primeiro ano de semeadura. Tal fato torna-se particularmente mais importante nesta região, visto que os solos, por formação geológica, são de baixa fertilidade natural.

Com base nestes fatos, e ainda na necessidade de produzir forragem em boa quantidade e principalmente de boa qualidade, de forma constante durante o decorrer dos anos, para estabilizar a produção de leite próximo ao limite superior, a cooperativa Agro-Pecuaria Batavo Ltda lançou um programa de incentivo ao plantio de alfafa, no inicio de 1990.

Em tal programa, a Cooperativa financiou a implantação de 48 hectares para 20 associados, devido ao alto custo de implantação, e prestou assistência técnica intensiva, através de seu Departamento de Fomento, desde o manejo de solo antes da implantação da cultura, inoculação e peletização da se-mente, plantio até o acompanhamento das produções obtidas durante o primeiro ano de estabelecimento da cultura.

A partir do sucesso da implantação da alfafa sob o manejo preconizado, mais produtores manifestaram interesse no plantio desta forrageira.

Transcorridos dois anos após a implantação do programa, os seguintes resultados foram obtidos:

*- área existente até 1990 - 55 hectares;*
*- área implantada após 1990 -215 hectares;*
*- 270 ha distribuídos entre 50 produtores = 5,4 ha/ produtor.*

Os 270 ha, produzindo em média 12.000 Kg/ha/ano de matéria seca, resultam em 3.240.000 Kg de matéria seca. 3.240.000 Kg de boa qualidade tem potencial para produzir 5.832.000 litros de leite, a um custo de 1.620.000 litros, ou seja, cada 1 Kg de m.s. produz 1,8 litros de leite a um custo de 0,5 litros de leite.

Convém mencionar que, de todas as áreas implantadas nestes três últimos anos, 10% foram perdidos e outros 10% tiveram seu stand prejudicado por problemas de implantação e/ou manejo da área e cultura. Quanto aos sistemas de plantio adotado, 70% da área total foi implantada sob plantio direto, e os outros 30% sob plantio convencional. Vale lembrar que o grande inconveniente do plantio convencional, mesmo em áreas com terraços e/ou curvas de nível, é o elevado risco de erosão devido ao excessivo preparo do solo que a cultura exige. Este fato torna-se mais grave durante a primavera, quando é freqüente a ocorrência de chuvas torrenciais.

O freqüente acompanhamento das áreas implantadas possibilita fazer as seguintes avaliações:

- o manejo da área antes da implantação é de fundamental importância. Deve ser executado mediante incorporação de corretivos de solo - calcário, fósfe potássio e adubações orgânicas esterco e plantio de aveia pe para cobertura de solo - visa implantação de uma cultura exige alta tecnologia.

- a área da propriedade destinada à implantação de alf deve ser aquela que apresenta melhor fertilidade natural e me topografia para fins agrícolas com pouca declividade;

- o solo, comprovadamente deve ser profundo e permeável fim de possibilitar rápido desen volvimento radicular, evit encharcamento nos períodos chu vosos e evitar o estabelecimento doenças radiculares. Solos exces sivamente arenosos ou argilo não são indicados para alfafa;

- a semente deve s comprovadamente de boa qua dade. Semente velha deve s reanalisada;

- a inoculação e peletiza da semente são práticas in pensáveis e criteriosas;

- o solo para plantio, de estar bem destorroado e nivela tendo em vista o pequeno tamanho da semente e para evitar a presença de terra no material a ser recolhido futuramente;

- as épocas de semeadura primavera e outono - pa estabelecimento da alfafa, diferem entre si de forma mais expressiva apenas no controle de ervas daninhas - predominância de folhas largas no outono e folhas estreitas na primavera - sistema de plantio sugere-se plantio direto primavera e cultivo mínimo outono;

- no manejo da cultura, e

a implantação da lavoura, o produtor deve ficar atento ao ponto ideal de corte. Enquanto a alfafa estiver em pleno crescimento deve-se evitar o corte, e no momento em que houver estabilização de crescimento e, aparecimento de brotações novas deve efetuar o corte. Neste aspecto, o produtor também deve considerar que, quanto ocorre a estabilização de crescimento são freqüentes o surgimento de manchas foliares e quedas de folhas com conseqüente queda da qualidade nutricional da alfafa;

- a adubação costumeiramente efetuada durante a implantação do alfafa, é suficiente para mantê-lo durante o primeiro ano. Após esse período, devem ser efetuadas reposições periódicas de Fósforo, Potassio, Cálcio e Magnésio, além de micro elementos menores - Boro, Zinco e Cobre - de acordo com seu potencial de produção. (Ver no Suplemento Especial do Jornal nº.84 do período de julho/agosto de 1991);

- a limpeza da lavoura após o primeiro ano de implantação não será motivo de preocupação por parte do agropecuarista, desde que a mesma tenha sido implantada da maneira preconizada. Isto porque seu desenvolvimento será suficientemente rápido para causar bom domínio sobre as ervas daninhas anuais, através de seu sombreamento;

Para finalizar, vale lembrar aos agropecuaristas que a alfafa é uma cultura tão importante quanto qualquer outra destinada a colheita de grãos como, soja, milho, trigo, cevada, triticale. Portanto, merece a maior atenção possível, quanto ao preparo do solo e época de plantio, ou seja, exige alta tecnologia.

Entretanto, a maior diferença da alfafa em relação as demais culturas está no seu lucro, líquido e certo. Pois nas condições de clima existentes na região, uma vez bem implantada, não haverá frustração de safra nos próximos 4 ou 5 anos.

Como meta de cultivo o lembrete de que 1 ha de alfafa deve produzir 18 toneladas/ha/ano de matéria seca. Podendo alcançar 2T/mes na primavera e verão e reduzir ate 1T/mes no inverno.

Observe a seguir o gráfico de produção média das cinco áreas monitoradas durante os dois primeiros anos de implantação:

## PRODUÇÃO MENSAL DE MATÉRIA SECA E MÉDIA ANUAL DA CULTURA DE ALFAFA EM CINCO ÁREAS MONITORADAS

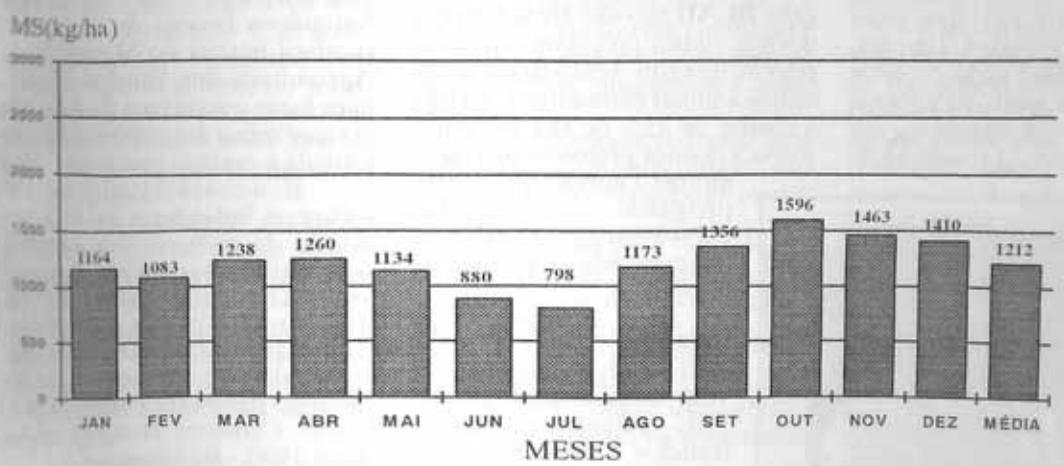


*Coop. Central de Laticínios do Paraná. Arapoti - Castro. Pr.*

# BLAD
## DEFICIÊNCIA DA ADESÃO LEUCOCITÁRIA BOVINA

*Marcos Miguel Ferraz*
*Medico Veterinário do Departamento de Bovinocultura da C.C.*

É uma doença geneticamente transmissível que ocorre no gado holandês. Na realidade, há um gene associado com um novo defeito genético na raça holandesa. Bezerros precisam receber o gene de ambos os genitores para serem afetados. Bezerros afetados raramente sobrevivem por mais de 3 meses após o nascimento. Um teste de tecnologia de DNA serve para identificar carreadores do gene provocador da doença.

**BLAD** é uma síndrome clínica que afeta bezerros jovens, com sintomas físicos que incluem período de febre, diarréia, pneumonia e ausência da cura da doença a qual leva a morte antes dos 3 meses de idade. A doença é caracterizada pela deficiência de uma proteína necessária para as células brancas do sangue (leucócitos) para atravessarem a parede dos vasos sanguíneos e atingirem o local da infecção.

**O BLAD** foi descoberto por ser acometido por um gene autossomal recessivo simples, similar ao mesmo gene do fator vermelho, nos quais os animais afetados precisam receber o gene do pai e da mãe. O resultado de todos os testes nos Estados Unidos indicam que pedigree de carreadores conhecidos do gene do BLAD podem ser identificados através de OSBORNDALE IVANHOE, com seu descendente em particular, CARLINM-IVANHOE BELL, sendo identificado como um carredor. Recentes testes, no Canadá, identificaram que Puget-Cound Sheik é também um carreador do gene BLAD.

Avenger *BL foi atestado para BLAD e é carreador do gene

Os animais carreadores do gene **BLAD** não são afetados pela doença clinica propriamente dita, porém quando acasalados com outros animais carreadores, teriam a chance de 25% de sua progênie sofrer a doença prematuramente e morrer. Outros 50% da sua progênie seriam carreadores e não a doenças nos 3 primeiros meses.

Nos catálogos de touros, os animais carreadores do gene BLAD vêm com a designação *BL. Aqueles que foram testados e não são carreadores do gene vem com a desig-nação *TL. Estas medidas servem para auxiliar eliminação de reprodutores gene BLAD na popula de gado holandês.

Recentemente to os reprodutores dos ma bros da GENEXC (BCAI, CIAQ E W foram testados p BLAD. Três reprodut a saber 73H0659 a La Hankeye , Et 73H06 Lavack Farms Trace 28H0187 Hanover Stardom, foram id tificados como carread do BLAD. De acordo com a pr alta para produção e tipo Hawkeye e Stardom, seus sê serão afetados regularme porém, o Tracey será removid serviço de coleta.

O exame para o BL através da análise do DN comumente feito no sangue sêmen está comercialme disponível a um custo acessíve Laboratório de Tipag Sanguínea Bovina de Saska recebeu licença do Ministér Agricultura dos Estados Un para fazer o teste para BLAD faz que seja o único laborató Canadá a realizar este teste.

É aconselhável que rebanhos holandeses se faça estudo de pedigree das mat para verificar se estas não pos um ascendentes carreado símbolo *BL (possue gene p BLAD); e esta não deve acasalada com reprodutor que catálogo apresente a mesma s Fonte: Canadian Holstein, v April 1992 - By Genexcel.

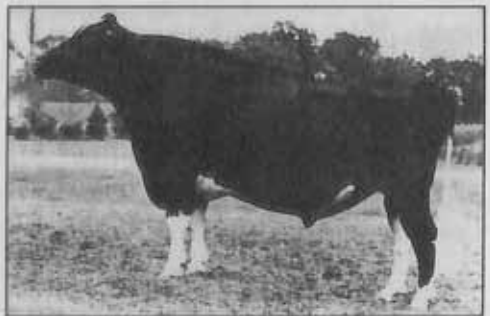

*Blackstar *TL foi testado para BLAD e não é carreador.*

*Cooperativa Central de Laticínios do Paraná - Castro.PR*

# A DIETA TOTAL MISTURADA

*Weston Vicente Giordini*
*Zootecnista*

Ao longo do tempo, a evolução das tecnologias aplicadas a nutrição do gado leiteiro, têm-se mostrado eficazes em suas propostas. Pode-se citar exemplos como os concentrados de alta produção, que fornecem a proteína "by pass" dos animais; as gorduras protegidas, que auxiliam sobremaneira a reprodução; o uso de bicarbonato de sódio e óxido de magnésio, dando suporte a uma boa função de rúmen; além de muitos outros complementos, que podem ser utilizados para animais bastante produtivos.

Porém, alimentar animais de alta produção é uma tarefa bastante difícil, porque à medida que a produção se eleva, a observância a detalhes torna-se fundamental, pois por pequenos detalhes, pode-se comprometer a produção na próxima lactação.

Animais de alta produção são tratados, as vezes, por até 10 ingredientes diferentes. Imagine, por exemplo, uma granja onde 50 animais são considerados de alta produção. O trabalho é grande, porém a resposta é compensadora. De nada adianta relaxar no trato, porque duas coisas podem ocorrer com a vaca diminuí o leite ou haverá, com certeza, problemas na lactação futura.

Estes animais recebem volumes de alimentos que podem variar de 20 a 30 kg (por exemplo: forragem pré-secada), até volumes de 1/2kg por dia óxido de magnésio). Além do mais, alguns ingredientes são de baixa palatabilidade, dificultando ainda mais o trato com as vacas.

A fim de facilitar este trato e de evitar o máximo possível a variação do pH ruminal, fator este importantíssimo para o bom desempenho dos animais, pode-se lançar mão da Dieta Total Misturada.

A dieta total misturada consiste em promover a mistura proporcional de todos os alimentos que os animais precisam para desempenhar sua função produtiva a contento.

Estes alimentos devem ser tanto as forragens (silagens de milhos, pré-secados, fenos) como os grãos (milho, soja, concentrados), além dos aditivos. Tudo bem misturado deve apresentar, por Kg de matéria seca, a quantidade de nutrientes exigida pelos animais nos diferentes patamares de produção.

A dieta total misturada apresenta vantagens em potencial:

a. eleva a produção de leite e gordura do leite;

b. quando a mistura contem mais de uma forragem, tem-se assegurado o consumo desejado de cada uma delas;

c. o equilíbrio entre grãos e forragens é facilmente controlado;

d. os riscos de ocorrências de distúrbios digestivos é diminuído;

e. há o aumento de eficiência tanto do alimento como dos animais (mais leite com menos alimento)

f. alimentos de baixa palatabilidade podem ser adicionados a dieta sem causar problemas;

g. a adaptação da mecanização e simples;

h. assegurada uma grande acuidade (certeza) na formulação das dietas;

i. as necessidades de fibras são diminuídas, além de muitos outros pontos.

No entanto, este sistema pode trazer algumas desvantagens, tais como:

a. o uso de silagens e fenos de longo comprimento dificulta a mistura dos alimentos;

b. equipamentos adicionais para mistura e pesagem necessitam ser adquiridos;

c. e necessária a divisão dos animais em dois ou mais grupos de alimentação, a fim de otimizar os resultados;

d. vacas que não tem potencial genético para alta produção podem ser superalimentadas;

e. a dieta e sua umidade devem ser monitoradas rotineiramente;

f. a utilização de pastagens, neste sistema, não pode ser feita eficientemente.

Já existem maquinas que executam esta mistura no mercado nacional, e a tendência e que haja um aumento de opções com o decorrer do tempo.

É importante que o produtor tenha consciência de que o sistema de dieta total misturada acompanhado de um bom manejo significa mais leite. Vacas de alta produção consomem mais alimentos, produzem mais esterco, bebem mais água, e requerem um espaço melhor para viver. Assim o manejo do esterco, os sistemas de ventilação, água e estabulação devem ser compatíveis com as exigências que a dieta total misturada requer para a obtenção de ótimos resultados.

A observação de todos estes pontos, com a atuação conjunta da assistência técnica, trará sem dúvida, excelentes resultados.

# SERÁ QUE FAZER SILAGEM DE MILHO É FÁCIL?

*Joseph H Kunz*
*Extencionista*

Quando se fala ou escreve sobre silagem de milho, as pessoas dizem: mas eu sei fazer isso, não cometo mais erros. Bem, se você e uma destas pessoas, pare ai e não leia mais este artigo, porém tenho certeza que se perde, anualmente, 15 a 25% de matéria seca e energia em silos de milho. Consequentemente, o custo de nossa silagem aumenta nesta percentagem. E se nós considerarmos que 20% ou mais da dieta total é silagem de milho o custo do leite só por este fato aumenta 10 a 20%. Se você acha pouco pare ai e não leia mais. Se você achou o assunto interessante, continue lendo, porque nos vamos dar alguns palpites e mostrar onde podemos melhorar esta silagem. As melhores silagens são aquelas que se diferenciam o menos possível do material originalmente ensilado.

Tendo isto em mente, devemos analisar onde erramos e onde ocorrem os maiores desperdícios.

## SILAGEM DE MILHO E SORGO

Falando em milho, devemos incluir o sorgo. Ao longo deste artigo faremos referência as duas forrageiras. Ambas são fáceis de ensilar porque têm a capacidade de fermentar facilmente os açúcares e carbohidratos que são transformados em ácidos orgânicos. A formação de ácido láctico na matéria seca, de 2 a 3%, é de grande interesse para o processo de conservação. Dos outros ácidos, como o acético e o butírico, não é desejável que se formem em grande quantidade no processo de fermentação, os níveis devem ser entre 0,5 e 1,0% e de 0 a 2%, respectivamente. Também se forma amônia como subproduto da degradação de proteína. Níveis altos de ácido butírico e acético somados com alto nível de amônia indicam que o processo de fermentação não foi o ideal.

A silagem de milho ou sorgo oferece todas as condições para uma boa fermentação, ou seja, altos níveis de açúcar e carbohidratos, com uma baixa capacidade de buffer. A capacidade de buffer ou neutralizadora depende dos níveis de proteína e dos outros elementos que tem a capacidade de neutralizar os ácidos, como por exemplo, os minerais: cálcio, magnésio, etc., os quais são poucos no milho e sorgo.

A quantidade de açúcar diminui conforme a maturidade da planta. Mas com o aumento da matéria seca não é necessário uma quantidade alta de acido láctico para estabilizar o processo de fermentação da silagem.

A maturidade do milho ou sorgo influi bastante na facilidade de ensilar. Aumentando a porcentagem de matéria seca e extrato não nitrogenado e abaixando o nível de proteína, pode causar um nível mais alto de ácido láctico, diminuindo o nível de ácido acético e butírico.

Um nível muito alto de matéria seca pode ajudar na formação de fungos e bacte prejudiciais na fermentação.

A tecnologia usada t como objetivo minimizar as pe na fermentação desta forrag com boas condições para ens Uma boa fermentação acontece ambiente com ausência de ar.

Para se chegar no me resultado se deve usar os segu métodos para ensilar:

1. Ensilar o milho ou so em estado leitoso nos gr significa 30 a 35% de matéria s

2. Encher o silo o m rápido possível, diminuindo tempo com possibilidade entrada de ar. Por esta razão, d se procurar alta capacidade colheita e transporte.

3. Tirar, com a compacta a maior quantidade de ar pos da silagem. A picagem fina p ajudar neste objetivo.

4. Manter o ar fora do s durante o processo fermentação. Isto se consegue c uma boa vedação com plás coberto com terra.

A picagem fina pode aju bastante. Na pratica, se obse

que a picagem não e adequada porque a ensiladeira não esta em condições ideais. Para obter o máximo rendimento com uma picagem adequada, as facas devem estar bem afiadas e as contrafacas bem reguladas.

Vantagens de uma picagem adequada:

- facilita a colheita, o transporte, a ensilagem, a retirada do silo e a alimentação;
- melhora a fermentação em função da melhor compactação;
- libera mais rápido os conteúdos celulares;
- aproveita melhor o silo em função do maior peso por metro cúbico;

- diminui a perda por fermentação após aberto o silo;
- melhora o aproveitamento dos grãos.

Recomendações Européias usam as seguintes relações entre matéria seca e tamanho das partículas:

M.S. menor que 27% tamanho da partícula = 7 mm

M.S. entre 27 e 30% tamanho da partícula = 4 a 7 mm

M.S. maior que 30% tamanho da partícula = 4 a 7 mm com quebra da semente.

Quando a matéria seca é superior a 30%, se recomenda quebrar os grãos do milho porque normalmente com uma matéria seca maior, ficam duros, com possibilidades de escapar do intestino no esterco.

O tempo utilizado para encher o silo é de grande importância. Existem grandes perdas pela demora para fechar o silo. Conforme pesquisas, pode se esperar 9,5 de perda da matéria seca quando se demora 3 dias para fechar o silo. Quando se demora 6 dias, 15,8. Perdas estas causadas por fermentações aeróbicas, causando grande dano. A capacidade de ensiladeira normalmente é baixa, pois se aumenta a área a ensilar, sem aumentar a capacidade operacional, ocasionando demora para fazer o silo, perdendo muito dinheiro. A solução deste problema pode ser a compra de mais uma ensiladeira e com isso mais um trator, etc., pode ser também uma ensiladeira com uma capacidade maior; de duas linhas por exemplo: para isso precisa também de um trator maior, o que resulta em investimento. Como o problema da baixa capacidade operacional não é sómente seu, mas de seu vizinho também, a solução seria ambos trabalharem juntos, ou seja, fazer o silo de um em conjunto e depois o outro. Assim, se trabalha o mesmo período em dias mas se consegue 2 silos onde se perdem 6% a menos no processo de ensilar. Silos com capacidade até 300 metros cúbicos devem ser enchidos em um dia. Caso a capacidade da ensiladeira for inferior, deve se fazer silo menor. Com o trabalho em con-junto pode se ganhar muito dinheiro.

Queremos mostrar isto com um exemplo: A capacidade de uma ensiladeira é de aproximadamente 1,3 ha por dia com 6 horas de funcionamento. Já 1,0 ha produz 15.000 Kg de M.S., portanto, 19.500 Kg por dia. Em seis dias seria 117.000 Kg, ou seja, 780 metros cúbicos aproximadamente.

Conforme os dados da pesquisa, em 6 dias perderíamos 15,8 de matéria seca, ou seja, 18.486 Kg de matéria seca a um custo de 6,5 centavos de dólar americano, tendo um resultado negativo de US$ 1.201,59. O mesmo silo se realizado em 3 dias, perderíamos 9,5% de matéria seca, ou seja, 11.115 Kg, equivalente a US$ 722,47, resultando em US$ 479,11 a menos. Considerando que foi trabalhado 6 dias x 1,3 ha = 7,8 ha neste silo, podemos concluir que o custo por ha pode ser reduzido em US$ 61,41, o equivalente a aproximadamente 267 litros de leite.

Para conseguir isto, a única coisa que devemos fazer é trabalhar em conjunto.

## *CONCLUSÕES*

Existem muitas perdas no processo de ensilar o milho e sorgo, relacionado com a demora para encher o silo e a capacidade das ensiladeiras. Cada dia a mais que se demora para encher o silo, maior a perda. Por isso, se deve aumentar a capacidade de ensilagem, comprando ensiladeiras ou simplesmente trabalhando em conjunto, evitando assim, a perda de matéria seca e nutrientes. Assim, pode-se ganhar mais sem gastar mais.

O milho e o sorgo são forrageiras fáceis de se ensilar, porem perde-se muitos nutrientes sem necessidade.

*Cooperativa Central de Laticínios do Paraná - Arapoti - Castro/PR.*

REVISTA
DOS
CRIADORES

A publicação mais completa em pecuária - 65 anos de experiência sempre atualizada

EDITORA DOS CRIADORES LTDA
R. José Cesar de Oliveira, 175
S. Paulo - SP - 05317-000
Tel.:(011)8317712 e 8317966 r 32

# PROPRIEDADE RURAL EXIGE ADMINISTRAÇÃO EFICIENTE E PROFISSIONAL

*José Flavio Machado Leão*
*Engenheiro Agronomo MS ESALQ e diretor*
*Lasito de Carvalho Consultores Associados*

**Em outubro de 1994, um importante executivo norteamericano Arthur Zeikel, presidente da Merril Lynch Asset Management, que administra cerca de 164 bilhões de dólares em ativos, endereçou uma carta à sua filha Jill Anne, para ajudá-la a administrar seus investimentos pessoais.**

**Por conter conceitos básicos e universais em qualquer atividade, este documento foi adaptado pelo engenheiro agrônomo José Flávio Machado Leão, da Losito de Carvalho Consultores Associados, para ser aplicado no setor agropecuário - a sua área específica de atuação profissional.**

**O objetivo é passar para quem trabalha a terra, seja o pequeno sitiante, até o empresário dos grandes projetos agropecuários, algumas destas idéias tão importantes no processo da moderna administração rural, enfocados sob a ótica um grande líder empresarial do mercado financeiro.**

A administração da propriedade rural é um esforço coletivo dos proprietários, técnicos e funcionários, através do qual se tenta atingir uma meta previamente estabelecida, balanceando o potencial de produção da propriedade, o nível de investimento a ser efetuado, a valorização patrimonial e o resultado econômico das atividades desenvolvidas.

Uma boa administração é uma tarefa complexa, que requer tempo, disciplina, paciência, conhecimento e, principalmente, muita dedicação e trabalho. Muitos proprietários deixam de seguir alguns princípios simples, já testados através dos tempos, que aumentam as chances de se atingir com sucesso as metas desejadas, minimizando os riscos associados a este tipo de atividade. Eis algumas idéias para ajudar nesta tarefa:

## NÃO BRINQUE DE FAZENDEIRO.

A propriedade rural deve ser administrada profissionalmente, de forma séria e competente. Participe ativamente e demonstre interesse. Se você não o fizer, por que os outros farão ?

## NADA É GRATUITO.

Risco e retorno estão interrelacionados. Estabeleça objetivos razoáveis, conhecendo o compartimento ecológico em que se localiza a sua propriedade (solo, clima, recursos hídricos, cobertura vegetal), as técnicas de produção mais adequadas, os recursos humanos e operacionais disponíveis e as possibilidades de comercialização.

## NÃO COLOQUE TODOS OS OVOS NA MESMA CESTA.

Diversifique. Atividades rurais englobam desde a produção de rabanetes ou frangos de corte, no prazo de sessenta dias, até a exploração florestal, com o plantio de árvores destinadas à produção de madeira nobre, após 25 anos. Programas zootécnicos podem ser perfeitamente integrados com a agricultura, aumentando a estabilidade do sistema.

## NUNCA ARRISQUE DEMA... PARA OBTER RETORNO...

A agropecuária deve s... vista como uma atividade est... Plantios fora de época para se ob... melhores preços devem s... garantidos por eficientes pr... gramas tecnológicos. Cultu... exóticas, espécimes raros, ani... com preços recordes em le... geralmente farão você per... dinheiro.

## REINVISTA OS RESULTADOS.

As atividades dos setor r... não são extrativas. Aplique ... resultados no seu próprio neg... aperfeiçoando-o. A corr... modernização do seu trabalho p... sempre um aumento de p... dutividade e, consequentemen... maiores lucros.

## FAÇA COMPARAÇÕES... PERFORMANCE.

Conheça os seus visi... estude e avalie seu sistema ... produção e os resultados ob... Copie e aprimore o que ... necessário.

## NÃO TENHA RECEIO D... ASSUMIR PERDAS.

Não insista no que ... funciona. A agropecuária não ... ser vista como um ... Entretanto, eventuais er...

fracassos no sistema de produção podem ocorrer. Trabalhe sempre nos projetos produtividade e preços médios. Na prática produza o máximo, com custos mínimos e venda pelo melhor preço possível.

### CUIDADO COM MODISMOS.

Estude a fundo seu processo de produção. Cuidado com as atividades em moda, que na prática, nem sempre são muito viáveis e realistas.

### PENSE, DECIDA E AJA.

Os processos de conhecimento, a decisão e a ação são atividades imprescindíveis na produção. Nem sempre haverá informações suficientes para eliminar todas as incertezas, mas procure estar sempre exatamente certo do que aproximadamente errado.

### CONSIDERE O TEMPO COMO UM FATOR DE PRODUÇÃO.

Um programa agrícola eficiente não dever ser imediatista. O proprietário rural deve ser fiel ao seu plano, fazendo, no entanto, as retificações e os reajustes necessários. O valor da produção normalmente obedece o desenho de curva senoidal, com altos e baixos. Conheça perfeitamente o ritmo dos acontecimentos e aproveite o timing do mercado.

### SOME O "COMMON SENSE" AO SEU BOM SENSO.

Normalmente os brasileiros usam a palavra bom senso como um handicap favorável: Acontece que muitas vezes o proprietário rural acredita que o bom senso é o seu próprio senso, o que nem sempre é correto. O melhor seria buscar nos povos saxonicos a melhor interpretação para o vocábulo, ou seja: o common sense é o senso de todos, especialmente o dos técnicos com experiência comprovada no setor.

Isto é apenas uma parte do que se precisa saber para atuar no campo. A chave do sucesso sem dúvida está em estudar sempre e trabalhar muito. É claro também que um pouco de sorte também sempre é indispensável.

## DEZ DICAS PARA O ADMINISTRADOR RURAL

**1- Planeje suas atividades, isto é: pense antes de fazer.**

**2- Procure descobrir sua verdadeira vocação no campo opte pelo que lhe der mais prazer e satisfação.**

**3- Conheça a fundo sua propriedade rural.**

**4- Selecione programas de produção viáveis, compatíveis com a região, e de acordo com a sua disponibilidade de tempo e recursos.**

**5- Trabalhe sempre com um olho nos custos de produção e outro nas tendências do mercado.**

**6- Treine seu pessoal para que eles façam bem e saibam por que estão fazendo. Incentive a participação de todos e a harmonia na equipe.**

**7- Procure aplicar sempre as mais modernas e eficientes tecnologias agronômicas dispo-níveis.**

**8-Controle cuidadosa-mente os processos; o follow up servirá de base para retificações e reajustes.**

**9- Lembre-se: a qualidade do produto depende dos processos que os geram.**

**10- Divulgue seu produto.**

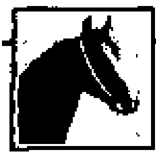

O projeto de um haras só pode ser feito por quem tem pedigree

...dução de cavalos no Brasil ...ou de ser hobby. Na hora ...ojetar ou fazer um check-up ...u haras consulte ...n entende.

...osito de Carvalho ...ultores Associados ...encontra os especialistas que ...nvolveram o Sistema Brasileiro ...odução de Equinos - SBPE

Assim, você terá a mais completa orientação sobre como desenvolver e manter o seu haras, custos, instalações, e principalmente nutrição.

Não há mais lugar para improvisações, empirismos e superstições na indústria do cavalo. Use a nossa tecnologia. E deixe os chutadores pastando.

**Além do projeto geral, oferecemos:**

- Adequação do haras ao SBPE
- Produção de ração no próprio haras
- Volumosos de qualidade
- Check-up do haras
- Cursos personalizados
- Produção de feno e de alfafa

LOSITO DE CARVALHO CONSULTORES ASSOCIADOS

Tel.: (0194) 34.9338/(0194) 33.4255 (noite)

# A MUNICIPALIZACÃO DO ITR

Antonio C[illegible]

*Secretário da Agricultura e Abastecimento do Estado de São P[illegible]*

*"Simplificar a vida é talvez a arte suprema" - Demócrito*

A implementação do Plano Real e a chegada do novo governo trouxeram a tona a necessidade das transformações estruturais que o País precisa para que a estabilização econômica e o fim da inflação se perpetuem. Embora alguns rejeitem essas mudanças, deve-se esclarecer que somente a sua concretização nos trará o progresso. Assim, a Reforma Constitucional não é condição única para eliminar a nossa pobreza, mas é, sem duvida, uma necessidade.

Nos últimos anos, o Brasil mudou velozmente de endereço, havendo um gigantesco êxodo do campo para a cidade, trazendo consigo e exibindo aos brasileiros do asfalto uma pobreza em escala sem precedentes. O que ocorreu com este enorme movimento de massa foi a transferência dos problemas do interior para as grandes metrópoles. E o que é pior, para uma sociedade tão carente de recursos, a solução de tais dificuldades seria bem mais barata se fosse aplicada no campo. Como os cofres públicos não tem a abundância do coração de Deus, cada cidadão que mora numa cidade de 50 mil habitantes custa 7,4 vezes menos do que o mesmo cidadão numa cidade de 5 milhões de habitantes, de acordo com os dados do último Fórum Mundial de Cidades.

O presidente Fernando Henrique Cardoso afirmou que o Brasil não é um país subdesenvolvido, é um país injusto. Talvez possa ser acrescentado que na realidade é subgovernado, pois o momento exige do governo posições claras e límpidas em relação a certos assuntos, como o combate à sonegação. O emaranhado burocrático e as constantes alterações em nossa legislação tributaria inflaram a sonegação a níveis injustificáveis. Neste aspecto, o poder dado ao Estado de tributar se legitima pelo uso do poder de gastar os recursos arrecadados.

O verdadeiro combate àqueles que não cumprem seu papel de pagar os impostos em dia ocorrerá no momento em que o governo fizer um acordo com a sociedade: não exibir apenas os músculos da punição, mas sim mostrar a função social destes tributos.

Na área rural, a situação não poderia ser diferente pois, com exceção daqueles que buscam na fraude tributária o enriquecimento fácil, a sonegação é o efeito, e a complicidade e irreal tributação é a causa. Num país onde a migração rural ocorre não pelo fascínio das grandes cidades, mas, sobretudo, pela expulsão do campo, são indefensáveis os baixíssimos índices de arrecadação registrados com o Imposto Territorial Rural (ITR).

Com sua cobrança centralizada em Brasília e baseada em dados totalmente defasados, a Nação reclama medidas urgentes para um imposto tão necessário economicamente e importante socialmente como o ITR. Em verdade, a tributação progressiva da terra não deveria ser encarada como um simples complemento de reforma agrária. Ao contrário, a reforma agrária deveria, sim, ser complementar ao ITR.

Durante nossa gestão no Ministério da Agricultura, deixamos uma proposta ao Congresso Nacional no sentido de tornar a tributação fortemente progressiva sobre as terras improdutivas, de tal forma que o proprietário, em 4 anos, perderia simbolicamente a sua propriedade pelo imposto pago nesse período. Além do mais, determinamos a transferência de cobrança do INCRA para a Receita Federal, procurando dar mais agilidade ao processo, bem como deixamos por terminar um novo Recadastramento Rural que se tornaria a base de informações mais confiáveis na cobrança do ITR (o último recadastramento rural tinha sido feito em 1978)

Embora o nível de arrecadação tenha melhorado, o grande objetivo não foi complementado: a transferência do ITR para os municípios. Como se trata de um imposto cadastral, as inform[illegible] do cenário local são essenciais para [illegible] efetiva cobrança, pois o irregular ca[illegible] federal se mostra totalmente inefic[illegible] sua aplicação. Como a própria lei de[illegible]mina a elaboração de um novo cad[illegible] rural a cada cinco anos, a cobrança [illegible] ITR pelas prefeituras pratica[illegible] atualizaria as informações de um c[illegible] rural a cada ano. Para reforçar esta [illegible] atualmente cerca de 70% dos munic[illegible] brasileiros são rurais, e com cer[illegible] estariam dispostos a usar sua estr[illegible] nessa nova configuração tributária.

A agricultura nunca negou [illegible] deixara de contribuir com signific[illegible] parcela na geração de recursos desti[illegible] a eliminar a pobreza e a miséria do s[illegible] da sociedade. E a passagem do ITR p[illegible] a responsabilidade dos municípios [illegible] ao encontro dos seus anseios, p[illegible] implicará uma vertiginosa simplific[illegible] na vida do produtor rural, hoje habit[illegible] a um ritual burocrático para cumprir s[illegible] obrigações de contribuinte, além [illegible] contar com um governo que lateja [illegible] escuro com uma política agrícola ina[illegible]quada, devido a falta de informação sobre a estrutura fundiária.

Assim, ninguém melhor do que [illegible] comunidade local para cobrar e apre[illegible]sentar as contas à sociedade dos recursos ali mesmo arrecadados, pois, sem dúvida, o município saberá dar melhor desti[illegible]nação ao dinheiro proveniente do ITR [illegible] que o governo central, em Brasília.

Estamos, assim, estimulando as [illegible] autoridades municipais, e a sociedade em geral, para a mudança na Constitu[illegible] Federal do artigo 153, passando [illegible] responsabilidade do ITR aos munic[illegible] O poder local será mais eficie[illegible] cobrança, bem como o seu cidadão [illegible] Câmara Municipal melhor verific[illegible] aplicação dos recursos do ITR.

Afinal, por que o campo te[illegible] ser diferente da cidade: Alguém [illegible] imaginou o governo federal cobrando [illegible] IPTU?

## MEIO AMBIENTE NO BRASIL

### Informações especializadas para estudantes

O Serviço de Produção de Informação - SPI-, da EMBRAPA, coloca no mercado estudantil o ATLAS DO MEIO AMBIENTE DO BRASIL, co-editado com a Editora Terra Viva e com o apoio da Fundação do Banco do Brasil.

O ATLAS foi concebido e planejado principalmente para a formação de estudantes que estão se iniciando nos conhecimentos formais de primeiro e segundo graus. Esta publicação coloca à disposição de estudantes, e leitores de modo geral, dados atualizados sobre questões ambientais. As informações apresentadas no ATLAS não estão limitadas a mera exposição: pretendem, mesmo, servir como ponto de partida para o exercício reflexivo, provocador de mudanças desejáveis de comportamento, no que diz respeito ao entendimento da vida no planeta Terra. Aborda questões como: explosão demográfica, crescimento urbano, devastação de florestas, energia, erosão e desertificação, poluição do ar e da água, lixo urbano e outros tipos de poluição.

Instrumento sem similar no Brasil, reúne informações atualizadas das mais conceituadas fontes nacionais e internacionais, comparando o Brasil com os demais países do mundo.

Os textos são apresentados em linguagem simples e objetiva, e amplamente ilustrados com mapas, gráficos e tabelas, numa abordagem que agrega informações no intuito de facilitar o estudo crítico das questões ambientais.

O ATLAS DO MEIO AMBIENTE DO BRASIL está disponível nas livrarias dos grandes centros e no Serviço de Produção de Informação - SPI - , da EMBRAPA ou por reembolso postal, por preço acessível: R$ 21,00.

## CANCHIM ELEGE NOVA DIRETORIA

O criador João Paulo Canto Porto foi reeleito presidente da ABCCAN - Associação Brasileira de Criadores de Canchim - pelo trienio 95-97. A eleição foi realizada no dia 20 de março passado em São Paulo, SP.

Após a cerimônia de posse foi distribuído um questionário onde os presentes votaram sobre o lugar mais adequado para a realização da Exposição Nacional da Raça Canchim, além de opinar sobre o juiz de preferência de cada um. A decisão ficou com Campo Grande - MS e o julgamento dos animais ficará por conta de um juiz americano. Na ocasião também foi definido o calendário geral de exposições e leilões que a raça participará durante o ano.

O principal desafio do programa da nova diretoria é implantar as recomendações feitas pelo Planejamento Estratégico elaborado recentemente pela Boucinhas e Campos. A modernidade da raça e seu posicionamento cada vez maior dentro da pecuária de corte nacional são objetivos constantes da ABCCAN, que terão continuidade nesta gestão.

Segundo Dr. João Paulo, uma importante novidade - idéia do Núcleo do Mato Grosso do Sul - será implantada. A idéia, que foi bem recebida entre os presentes, é incentivar os proprietários de touros Canchim para cruzamento industrial a cada vez que venderem um touro, pagarem uma quantia simbólica a ABCCAN para que seu cliente se torne "Sócio-cruzador", isto é receba literatura e correspondências da Associação durante 6 meses, após o que pode decidir se continua sócio ou não. Com isso a raça estará sendo fomentada e o número de criadores também.

**DIRETORIA ELEITA:**
**Presidente:** JOÃO PAULO CANTO PORTO; **Vice-presidente administrativo:** PETER BAINES; **Vice-presidente financeiro:** OCTÁVIO GUAZZELLI JUNIOR; **Vice-presidente:** WILSON GOTTARDI; **Vice-Pres.de Provas e Exposições:** DIOGO ANTONIO DE BARROS; **Vice-presidente regional:** ALDINO PALLA

## AUMENTA A PRODUÇÃO DE LEITE B

Em 94 o leite tipo B retomou seu ritmo histórico de crescimento, apresentando uma produção de 807,6 milhões de litros, conforme levantamento da Associação Brasileira dos Produtores de Leite B.

O estudo abrangeu 118 empresas de laticínios que fazem a captação do produto (98,8% do universo). O crescimento em 94 foi de 2,5%. Em 93 a produção havia caído 3%, primeiro saldo negativo

Fonte: Banco de dados - Leite B

**LEITE B - PRODUÇÃO, NÚMERO DE PRODUTORES E EMPRESAS - BRASIL**

| | ANO | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ITEM | 1988 | 1989 | 1990 | 1991 | 1992 | 1993 | 1994 |
| Nº DE PRODUTORES | 4.365 | 5.162 | 5.455 | 5.501 | 6.185 | 5.541 | 5.340 |
| Nº DE EMPRESAS (1) | 89 | 97 | 105 | 99 | 120 | 116 | 118 |
| PRODUÇÃO (EM MILHÕES DE LITROS) | | | | | | | |
| ANUAL | 629,0 | 652,5 | 734,3 | 752,2 | 812,5 | 787,7 | 807,9 |
| MENSAL | 52,4 | 54,4 | 61,2 | 62,7 | 68,0 | 65,9 | 67,5 |
| DIÁRIA | 1,7 | 1,8 | 2,0 | 2,1 | 2,3 | 2,2 | 2,3 |

| | VARIAÇÃO % (*) | | | | | | MEDIA % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ITEM | 89/88 | 90/89 | 91/90 | 92/91 | 93/92 | 94/93 | 88-94 |
| Nº DE PRODUTORES | 18,26 | 5,68 | 0,84 | 12,43 | -10,41 | -3,63 | 3,86 |
| Nº DE EMPRESAS (1) | 8,99 | 8,25 | -5,71 | 21,21 | -3,33 | 1,72 | 5,19 |
| PRODUCAO | 3,74 | 12,54 | 2,44 | 8,02 | -3,05 | 2,56 | 4,38 |

(1) REFERE-SE AO NUMERO DE EMPRESAS DE LATICINIOS QUE PARTICIPARAM DO LEVANTAMENTO.
BANCO DE DADOS - LEITE B

dos últimos cinco anos.

As cooperativas participam com 70,6% da captação e as empresas privadas por 29,4%. A maior compradora do leite B foi a Vigor, seguida pela Parmalat, Cooperativa Agropecuária do Sudoeste Mineiro (Passos), LPC Industrias Alimentícias (Danone) e Cooperativa dos Produtores de Leite da Alta Paulista (Tupã).

Em 94 existiam no país 5.340 produtores de leite B.

## MASSACRE DA AGRICULTURA

A agricultura brasileira, há cinco anos está sendo massacrada, tanto a custos de financiamentos rurais, como sendo violentamente tributada nos seus Impostos Renda IR, como nos Impostos Territoriais Rurais - ITR, cujos incentivos foram todos cancelados.

O Sindicato Rural de Presidente Prudente entende que o governo está com isso, matando a "galinha dos ovos de ouro", que é a agricultura brasileira. É bom destacar que nos últimos cinco anos também, os produtores tem aumentado a produtividade agrícola, gerando a cada ano, recordes de safras, e como recompensa, por isso tudo, está sendo castigada e não beneficiada.

Os verdadeiros produtores rurais estão dispondo de seu patrimônio, conseguido com o labor diário de sol a sol, para pagar as dívidas nos bancos e os impostos mais elevados", lembra o Presidente da Cooperativa Agrícola Mista de Presidente Prudente, Dr. Décio Funari de Senna, que atua como Secretario Executivo junto ao Sindicato Rural. "Precisamos nesta hora, que o governo tenha consciência de modificar a atual situação, pois se isso não ocorrer, passaremos dentro em breve, a ter que importar todos os produtos que consumimos, inclusive aqueles da cesta-básica", conclui Dr. Décio.

## PRODUTO REVOLUCIONÁRIO CONTRA CARRAPATO

ACATAK combate o parasita, acaba com o ciclo de reprodução e gera lucros para o criador.

A Ciba-G
vai revoluc
o conce
combate
carrapato
infestam
bovino
leiro e
cam pre
gigantes
pecuária
pois de 8
de pesqu
Ciba est
çando o
pour-on,
produto
dito. A
controla
rapato d
viños, per
completa
peza dos
dá pro
mais prolongada ao gado, a
a produtividade, com maior
de peso, e diminui o "stres
agride o ambiente e é inf
aos seres humanos, animais
e aves.

Mais do que uma
marca, Acatak é um novo c
de combate ao carrapato. A
os produtos tradicionais
ocuparam de matar o para
proteção é temporária e o
permanece infectado. A
oferece mais. Ele interro
ciclo de vida do carrapato e
diferentes estágios (larva, n
fêmea adulta) inibindo a fo
quitina, a substância funda
para o desenvolvimento d
sito. O princípio ativo Fluaz
aplicado no dorso do ani
circula em sua corrente sang
As larvas e ninfas que su
sangue do bovino não com
a "muda" para o estágio se
e morrem, deixando ani
pastagens limpos.

O carrapato é um
poderoso da produtividade b
Hoje no Brasil, mais de 45 m
de cabeças (de um rebanho d
milhões), sofrem grandes
expressivos pela ação do pa
como perda de peso, que

# RAMES FARPADOS GERDAU.

## O rolo que desenrola.

**Os arames farpados Gerdau Elefante, Urso, Zebu e Touro são os únicos com carretel interno para você trabalhar muito mais rápido e aproveitar até o finzinho, sem perder nada. Com ele você ganha no tempo, no material e na perfeição da cerca. E ainda ganha na durabilidade porque ninguém mais tem a qualidade Gerdau. Da próxima vez, compre arame farpado Gerdau porque as cercas não são todas iguais, e a sua pode ficar muito melhor.**

QUALIDADE GERDAU

Tel.:(011) 874-4000 / Fax:(011) 861-0566

performance reprodutiva, estragos irreparáveis no couro. Os números são alarmantes. Em algumas regiões, o gado infestado pode perder ate 50 quilos por ano se não receber tratamento . E mesmo nos bovinos tratados com carrapaticidas tradicionais a perda pode chegar a 25 quilos. "Muitos criadores só se preocupam com o carrapato quando já estão com prejuízos", diz Carlos Roberto Wilwerth, gerente de Produtos da Ciba.

Acatak vem sendo testado no Brasil e na Austrália desde 87. Mais 300 criadores brasileiros já estão usando o produto, com ótimos resultados. Ate o final do semestre, o numero deve chegar a 600. Há casos de fazendeiros que, com uso de Acatak, tem aumentado a produtividade de seu rebanho de modo significativo.

Outro ganho econômico: o criador diminui drasticamente os tratamentos. "Acatak resolveu meus problemas com carrapatos", elogia Vitor Bratz, dono de 3.400 cabeças em Cachoeira do Sul (RS). Ele testou o produto em bovinos infestados entre 93 e 94. O excesso de carrapatos o obrigava a banhar o gado a cada 20 dias. Bratz aplicou Acatak em um lote de 150 animais. Outros 150 receberam produtos tradicionais. O lote com Acatak só precisou de 2 tratamentos e o outro de 6. Hoje, ele já usa Acatak em todo o rebanho.

## PROTEÇÃO PROLONGADA

Com Acatak, o gado fica protegido por um período prolongado de 7 a 12 semanas, contra uma proteção total de apenas 10 dias oferecida pelos carrapaticidas tradicionais. A seqüência de seu uso faz com que o espaçamento entre tratamentos seja cada vez maior. Essa proteção garantida por Acatak não havia sido alcançada antes por nenhum outro produto. Esse fato faz com que o produtor diminua os tratamentos (dois a três por ano). Com adulticidas convencionais, em casos mais críticos, o numero de tratamentos pode chegar a 24 "Acatak dá um fôlego ao criador" diz Guilherme Guaranha, pesquisador do IZ de Pindamonhangaba - (SP), que testou o produto em 40 novilhas infestadas artificialmente usando Acatak e produtos tradicionais. "Os animais ficaram limpos por muito mais tempo", diz "Sua ação residual e espetacular".

O Acatak é o único produto que controla o carrapato já resistente a qualquer princípio ativo. É ideal ainda para aquelas situações críticas nas quais a infestação já se espalhou. "Há criadores obrigados a dar banhos a cada 10 dias," diz o gerente da Ciba. Nas situações em que, pelo excesso de tratamentos, o carrapato pode criar resistências ao produtos tradicionais, Acatak pode atuar em rodízio, garantindo-lhes vida útil mais prolongada.

Como resultado de conceitos avançados, Acatak é ainda o produto certo para criadores com visão moderna dos negócios. "Estou satisfeito", diz Fernando Osório , de Santana do Livramento - (RS), que usou Acatak em 500 animais entre 94 e 95. "Escolhi os de maior valor econômico". O gado aumentou 750 gramas para 1 quilo o ganho médio de peso diário. "Ele engordou tanto que vendi logo". Osório quer repetir o uso para medir os lucros.

O uso de Acatak diminui ainda o "stress" provocado no animal pelo deslocamento para os banhos. "A queda do "stress" no meu rebanho ficou clara depois do uso do Acatak", diz Osório, que era obrigado a uma rotina estafante, de banhos a cada 30 dias. Com tanta movimentação o gado não consegue engordar de forma ideal.

Outra vantagem a diminuição de banhos ajuda também o fazendeiro a racionalizar o trabalho de sua mão de obra sem precisar dar tanta atenção aos animais, ela pode ser liberada para outras atividades na fazenda.

Para garantir manejo adequado e assistência técnica mais precisa, Acatak será vendido no início sòmente a criadores por meio dos distribuidores especializados da Ciba. Mais informações c Paulo Buscato/ Lu Fernand tels (011) 883-4228/852-047

## BANHO DE QUALIDADE

Nos nossos tempos dernos, no auge da inform nada mais agradável do relembrar que a qualidade tudo que se cria, mesmo as simples, se bem feito, podem dar um banho...um banho sucesso!

Falemos de um sistema confinamento isolado criação de bezerros.

Um projeto simples, tem como objetivo a sanidade rebanho. O berçário, sendo verdadeiro "Coração Rebanho", exige uma aten especial.

É preciso colocar questão que a sanidade é um pontos de destaque desta Portanto se tratando de co namento individual as vanta são muitas nos seguin aspectos:

Higiene - por estar isolados;

Medicina Preventiva - p possibilitar uma atenção espec a cada um dos animais, e a pa daí cortar "o mal pela raiz" no caso de diarréia e des dratação, tão comum em rec nascidos.

As gaiolas são simp (veja desenho), sendo que o s deve levar uma camada calcário e areia com possibilitando a absorção urina, fezes e bactérias ma rapidamente, mantendo o l seco e ventilado.

Outra grande vantag proporcionada pelo sistema locomoção das gaiolas co facilidade.

Quando é feita a ren de lotes de bezerros para fut grupos, ao mesmo tempo prepara o solo com uma

peza e desinfecção do local para
e possa receber novos animais.

Nos meses de inverno é
ssível adaptar um plástico
ente ao redor das gaiolas para
eger os bezerrinhos da chuva
o vento. Também é acon-
ável se colocar um pouco de
a nos dias mais frios, porque
, se mantém mais aquecidos,
to muito importante para
les que sofram alguma doença.

Nos meses de verão retira-
se plástico para que haja boa
ilação.

Qualquer produtor pode
gar a excelentes resultados com
ipo de confinamento, com um
estimento pequeno.

O que importa é sempre
ter a boa qualidade do
anho, a começar por uma
ação de bezerros nota 10.

**le A. Schubsky - Consultora**
**opecuária**
**lasex** Consultoria Agropecuária
l: 011 - 884.7788.

sadias de 86 grandes produtores agrícolas do País como forma de oferecer produtos e serviços mais adequados às necessidades de seus clientes. Este conselho é uma das ações do Programa Manah de Qualidade e Produtividade - PMQP. Implantado em 1994, o conselho prevê a busca de excelência dos produtos e serviços que a empresa oferece com base nas experiências dos próprios clientes.

Ao todo foram criados quatro conselhos, um em cada região do País, que reúnem os produtores mais representativos do Brasil. Os conselheiros foram convidados e escolhidos pelo seu dinamismo, senso crítico e espírito empreendedor. O mandato tem duração de dois anos e prevê duas reuniões anuais. O conselho tem acesso direto à direção da Manah, o que agiliza o processo de adoção de qualquer sugestão ou ação corretiva.

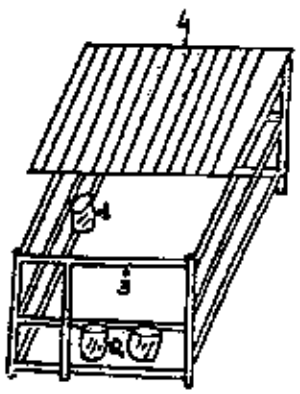


*1 - Balde de Rações*
*2 - Baldes de Leite e Água*
*3 - Porta móvel*
*4 - Telhas móvel*

## CONSELHO DE CLIENTES APROXIMA MANAH DO PRODUTOR

Entre os dias 5 e 7 abril, a Manah realizou o seu I Encontro Nacional do Conselho de Clientes. Durante três dias a empresa ouviu as sugestões criativas e críticas

Os encontros realizados nas quatro regiões no ano passado já trouxeram resultados positivos para a Manah. Assuntos pertinentes ao setor de fertilizantes foram colocados em discussão e a Manah buscou soluções práticas para muitos deles. Um dos problemas verificados pelos produtores, por exemplo, era a pontualidade das entregas de produtos. A empresa detectou que a origem do problema estava no serviço prestado aos caminhoneiros.

A solução encontrada foi melhorar o atendimento a estes caminhoneiros, providenciando instalações com telefones, TV área de estacionamentos, banheiros, almoço a preço de custo e assistência médica gratuita. A empresa ainda desenvolveu uma programação de carregamento para reduzir tempo de espera e providenciou ajuda no enlonamento da carga. O resultado foi a sistematização das entregas, que ganharam agilidade e pontualidade, como pediram os clientes. Atitudes como essa ajudam a Manah a se aproximar de seus clientes.

Fundada em 1947, a Manah opera hoje com três fábricas e três unidades de mistura com capacidade de produção de 1,5 milhão toneladas/ano de adubos. No ano passado a empresa alcançou um faturamento de US$ 260 milhões, registrando crescimento de 40% em relação ao volume registrado no ano anterior.

## PAI DA REVOLUÇÃO VERDE NO BRASIL

O agrônomo Norman Borlaug, Prêmio Nobel da Paz de 1970, veio ao Brasil a convite da empresa de fertilizantes Manah para proferir uma palestra durante o I Encontro Nacional do Conselho de Clientes da empresa. Conhecido como pai da Revolução Verde, Borlaug foi o grande responsável pela explosão da produção de trigo e arroz na Ásia em meados dos anos 60. A região era considerada improdutiva devido a falta de condições de parte do solo para atividades agrícolas. Porém, baseado na pesquisa científica, Borlaug possibilitou a melhoria do preparo da terra naquela região fazendo com que a produção de alimentos per capita crescesse.

Durante os anos 60 e 70 a Índia, o Paquistão e as Filipinas

*O agrônomo norte-americano Norman Bortaug, participou do I Encontro Nacional do Conselho de Clientes da Manah*

chamaram a atenção do mundo pelo seu progresso agrícola. Em seguida foi a vez da China que, desde aquela época, vem se tornando um dos maiores produtores de cereais do mundo. Estimular a produção de alimentos em países em desenvolvimento, amenizando assim a fome da população, rendeu a Borlaug o Prêmio Nobel da Paz.

O cerrado brasileiro é uma das regiões que mais empolgam o agrônomo. Até 25 anos atrás o cerrado era considerado sem valor para a agricultura. Como consultor da Embrapa Brasileira de Pesquisa - desde a década de 70, Borlaug estimulou a produção local através da correção do solo com fertilizantes químicos. O programa contínuo de pesquisa e as diversas experiências transformaram o cerrado brasileiro em uma das maiores regiões produtoras do país. Cerca de 25% da soja, arroz e milho do Brasil e 14% da safra de feijão são provenientes dessa região.

Bourlaug foi um dos grandes responsáveis pelo impulso da agricultura no mundo e até hoje se envolve em projetos de produção de alimentos em país em desenvolvimento. Para ele, o aumento da produção de alimentos através da expansão de áreas cultiváveis na ÁFRICA, Sub-Saara América do Sul virá como solução à fome mundial. Em sua visão, isso representa um desafio formidável para a agricultura.

## NOVA DIRETORIA ASSOCIAÇÃO BRASILEIRA DE CRIADORES DE BOVINOS DA RAÇA HOLANDESA

Rodolfo Rosas Alonso (Fazenda Santa Maria, Tiete/SP) é o novo presidente da Associação Brasileira de Criadores de Bovinos da Raça Holandesa. O dirigente está assumindo a entidade para um mandato de três anos. Rodolfo Rosas Alonso e sua esposa Maria do Céu tem hoje um plantel de 520 fêmeas, com 200 vacas em lactação. A produção diária e de 4.700 quilos de leite - media de 23,5 quilos por animal, mas o objetivo é chegar a produção de 7.000 quilos por dia em curto espaço de tempo.

Na presidência da ABCBRH, Rodolfo dará continuidade ao processo de informatização da entidade iniciado na gestão do seu antecessor Ellos Jose Nolli, bem como serão priorizados os serviços técnicos a campo, a ampliação do quadro associativo e o marketing da raça. "A partir do momento em que forem divulgados os pontos fortes do Holandês e os resultados obtidos, com certeza haverá mais interes-sados em entrar para a raça e fortalece-la ainda mais. Por outro lado, o criador precisa da entidade ao seu lado, oferecendo serviços e apoio. Esta é nossa função e vamos trabalhar para que os técnicos da ABCBRH estejam próximos do pecuarista", informa o dirigente. A diretoria completa da Associação Brasileira de Criadores de Bovinos da Raça Holandesa para o trienio 1995/98 é a seguinte:

**PRESIDENTE:** Rodolfo Rosas Alonso (SP)
**VICE-PRESIDENTES:** David Monteiro Leite Ribeiro (SP), Roberto Hugo Jank Junior (SP), Nelio Ribas Centa (PR) e Afonso Celso de Souza e Silva (MG);
**DIRETORES:** Auke Dijkstra (PR),

*A esquerda, Rodolfo Rosas Alonso, presidente da Associação Brasileira de Criadores de Bovinos Raça Holandês, entrega "Vaca em Minas" a Geraldo Alckim, vice governador do Estado. Dr. Antônio Cabrera, Secretario da Agricultura*

Amauri Andrade Pereira (MG), [illegible] João Morelatto (RS), Alexandre [illegible] Valença Marques (PE) e Cláudio Augusto Mente (SP)
**CONSELHO FISCAL:** Marco Antonio Carvalho Volta (SP), Hary Dockhorn (PR), Amaury Sodre Alckmin (SP), Antonio Carlos Canto Porto Filho (SP) e Raul Fonseca Guimaraes (PR)
**SUPLENTES:** Agostinho Sebastião Pedrosa (GO), Daniel Mattos Guimarães (GO), Luiz Roberto Madureira (PR)

## PLANO DE MELHORAMENTO GENÉTICO DA RAÇA NELORE

## INAUGURAÇÃO DO CENTRO DE AVALIAÇÃO DE TOURINHOS

Centro de Avaliação de Tourinhos

Na edição de Março publicamos uma série de entrevistas com criadores de Nelore, sobre aspectos atuais e perspectivas da pecuária de corte para o ano 2000. Por essa ocasião noticiamos que os criadores participantes do PMGRN, tinham instalado o CAT - Centro de Avaliação de Tourinhos e, agora, podemos anunciar que no dia 1º de Maio, iniciaram-se as atividades em 21 fazendas [illegible]

valiação de 78 animais com a idade entre 200 e 290 dias de idade. A duração da prova será de 448 as em 3 etapas:

a) na 1ª etapa (168 dias em confinamento) serão consideradas: circunferência escrotal (CE) e ganho em peso por dias de vida a um peso constantes (400 kg) GPD400 k;

b) na 2ª etapa (168 dias a pasto) também serão consideradas características ganho de peso e circunferência escrotal;

c) na 3ª etapa (112 dias em confinamento) serão avaliadas características como libido, capacidade de serviço, características de semem e de carcaça, temperamento e funcionalidade.

As avaliações tiveram inicio no dia 1º de maio, com a 1ª. pesagem/medida e a seguir são apresentados os primeiros valores médios:

| | |
|---|---|
| idade | = 243 dias |
| peso vivo | = 248 kg |
| CE | = 18 cm. |
| ganho em peso diário | = 1.02 kg/ dia de vida |

**Avaliação Genética de Touros, Matrizes e Animais Jovens.**

Durante o 6º. Leilão da Chácara Navirai, o Programa de Melhoramento Genético da raça Nelore lançou o seu primeiro sumário por Modelo Animal, que se constituirá em um marco importante da pecuária nacional.

Os interessados em adquirir um exemplar do Sumário de Touros, Matrizes e Animais Jovens, devem enviar cheque no valor de R$ 20,00 (vinte reais) a: *Prof.Dr.Raysildo B.Lobo, Dep. de Genética - Bloco C. FMRP - USP. Av.Bandeirantes, 3.900. Cep= 14600-000. Ribeirão Preto SP. Tel (016)-633.1610*


# EXPLORAÇÃO LEITEIRA

A MELHOR E MAIS ÚTIL PUBLICAÇÃO QUE OS NOSSOS ESPECIALISTAS PRODUZIRAM PARA O PRODUTOR DE LEITE

PUBLICAÇÃO PATROCINADA PELA ANPES
ASSOCIAÇÃO NACIONAL DE PROGRAMAÇÃO ECONÔMICA E SOCIAL

3.ª EDIÇÃO REVISTA

CAPÍTULO 1 — INTRODUÇÃO
CAPÍTULO 2 — MELHORES PASTOS, CHAVE PARA A PRODUÇÃO MAIS ECONÔMICA DE CARNE E LEITE
CAPÍTULO 3 — ALGUNS FATORES QUE AFETAM A PRODUÇÃO DE CULTURAS FORRAGEIRAS
CAPÍTULO 4 — AS FORRAGEIRAS: GRAMÍNEAS E LEGUMINOSAS
CAPÍTULO 5 — ESTABELECIMENTO E MANUTENÇÃO DE PASTAGENS
CAPÍTULO 6 — A MÁQUINA ANIMAL
CAPÍTULO 7 — SUPLEMENTAÇÃO DAS PASTAGENS
CAPÍTULO 8 — A ROTAÇÃO PASTAGEM-CULTURA
CAPÍTULO 9 — CONSIDERAÇÕES FINAIS

Pedidos à EDITORA DOS CRIADORES LTDA.

# INDICADOR AGROPECUÁRIO COOXUPÉ

| PRODUTO | ANÁLISE |
|---|---|
| CAFÉ | Os preços do café iniciaram o mês de março em R$ 155,00, chegando a atingir R$ 165,00 fechando o mês em baixa: R$ 150,00 a saca de RA1, com 15% de escolha. A tendência do mercado, este mês, é de preço previsão de alta na chegada do inverno |
| ARROZ | A queda dos preços preocupa os produtores de arroz, principalmente no Rio Grande do Sul, maior produtor de so país. O excesso de arroz é consequência de boa safra pelo aumento da produtividade. A falta de recursos para a faz com que os produtores vendam sua safra, derrubando ainda mais os preços. |
| LEITE | Segundo a planilha elaborada pela Empresa Brasileira Agropecuária (Embrapa), o custo para se produzir um litro tipo C é de R$ 0,25. A planilha de custo é um dos poucos instrumentos de defesa do produtor e deve ser utiliza uma referência de preço-base nas negociações entre o produtor e o comprador de leite |
| MILHO | No mês de março teve início a colheita da safra 95, com os fínos em R$ 6,80, colocados nos armazens da coop Despesas de secagem e armazenagem por conta do produtor. Os preços logo cairam para R$ 6,40, níveis que devem mantidos, pois o governo liberou recursos de EGF e, com isto, deverá diminuir a pressão de vendas de outras COOXUPÉ alterou a forma de recolhimento e comercialização de milho. Maiores esclarecimentos com o se comercialização de seu núcleo. |
| FEIJÃO | Os preços do feijão podem reagir, a partir deste mês, com a redução da oferta da safra das águas. Além das quantitativas, as qualitativas foram muito grandes, com a ocorrência de grãos brotados, mofados e chuvados, que o produto colhido. |
| SOJA | Os preços estão a espera de um aumento, que só deve ocorrer a partir do segundo semestre. As boas safras do e do Paraguai vão dificultar a colocação do produto brasileiro no mercado internacional. Os altos custos de transpo impostos tornam os preços da soja brasileira menos competitivos no exterior |
| HORTALIÇAS | No mês de março, o mercado de hortaliças se manteve em alta, devido a escassez das mercadorias. Os produtos foram comercializados a: cenoura, R$ 18,00 a R$ 20,00 (cx de 25 kg); beterraba, R$ 23,00 (cx de 25 kg); R$ 15,00 a 20,00 (cx de 23 kg). pimentão a R$ 8,00 a R$ 10,00 (cx de 12 kg). Os pagamentos de hortaliças são produtor no prazo de 20 dias após a chegada no Ceasa. A cebola esta sendo comercializada pela região de Santa Rio Grande do Sul e Argentina. Preços: Santa Catarina, R$ 20,00 o kg (mercadoria fraca); RG do Sul R$ (mercadoria fraca); Argentina, R$ 26,00 o kg (mercadoria ótima). Os preços das cebolas nacionais são pagos A cebola argentina, de boa aceitação no mercado, é paga a vista |
| CANA | Os grandes complexos sucroalcooleiros paulistas investem em modernos laboratórios para criação de inimigos para o controle da broca da cana Diatraeca sacharalis. Com a soltura de inimigos naturais do inseto nas p possível reduzir a quase zero o nível de infestação, sem causar nenhuma poluição ao meio ambiente |
| CARNE | Os preços da pecuária de corte voltaram ao equilíbrio. O gado de reposição também esta com os mesmos preços um ano atrás, o que indica que a alta conseguiu recompor a paridade entre o gado de abate e o de reposição. carne suína caiu 17,6%. Mesmo assim, os preços são favoráveis e superam a média histórica do setor nesta |

1 - DATA DE REFERÊNCIA: 3/4/95 2 - Café preço médio RA 1 COOXUPÉ 3 - Os volumes são líquidos recebidos pelo reprodutor 4 - Cota Cambio Flutuante preço de compra R$ 0,899 - No caso do leite, descontar frete e Funrural 5 - Analista: Fernando Antonio Pereira Rios - engenheiro agrônomo COOXUPÉ

cooxupé

# ABRIL

| PREÇO | PODER DE TROCA |
|---|---|
| Saca de 60 kg | Saca necessárias para adquirir 1 t. de 20-05-20 |
| R$ 150,00 | |
| US$ 166,80 | 1.58 |
| Saca em casca de 60kg | Saca necessárias para adquirir 1 t. de 04-14-08 + zinco |
| R$ 9,00 | |
| US$ 10,01 | 19,76 |
| Litro de Leite C | Litros necessários para adquirir 1t. de ração 22% AE |
| R$ 0,27 | |
| US$ 0,30 | 675,76 |
| Saca de 60 kg | Sacas necessárias para adquirir 1t. de 04-14-08 + zinco |
| R$ 6,46 | |
| US$ 7,10 | 27,70 |
| Saca de 60 kg | Sacas necessárias para adquirir 1t. de 04-14-08 |
| R$ 28,00 | |
| US$ 31,15 | 6,32 |
| Saca de 60 kg | Sacas necessárias para adquirir 1t de 00-20-10 |
| R$ 8,30 | |
| US$ 9,20 | 22,90 |
| Caixa de cenoura 25 kg | Caixas necessárias para adquirir 1t. de 04-14-08 |
| R$ 18,00 | |
| US$ 20,00 | 9,80 |
| Tonelada | Ton. necessárias para adquirir 1t. de 18-00-27 |
| R$ 11,03 | |
| US$ 12,20 | 22,30 |
| Kg frango vivo | Quilos necessários para adquirir 1t. de ração final |
| R$ 0,50 | |
| US$ 0,56 | 426,55 |

| Indicadores Gerais | Mar/95 | No ano | Últimos 12 meses | Proj ABR/95 |
|---|---|---|---|---|
| UFIR | 4,34 | 4,34 | ND | ND |
| Dolar oficial | 6,01 | 6,52 | 158,83 | ND |
| Ouro (BM&F) | 9,82 | 7,24 | 220,46 | ND |
| TR | 2,29 | 6,37 | 298,31 | 3,46 |
| IGP - M | 1,12 | 3,47 | 251,73 | 1,70 |
| RENDA DO DINHEIRO | | | | |
| Poupança | 2,81 | 7,98 | 323,38 | 3,98 |
| CDB Pre (Taxa Bruta) | 4,52 | 10,99 | 343,17 | 4,62 |
| CDB Pos (taxa Bruta) | 4,44 | 10,92 | 345,45 | 4,60 |
| Fundos de Curto Prazo | | | | |
| (Taxa Bruta) | 3,70 | 8,45 | 268,10 | 3,60 |
| CUSTO DO EMPRÉSTIMO | | | | |
| Credito Rural | 3,82 | 10,13 | 357,62 | 5,01 |
| Desconto de N.P. | 9,00 | 25,42 | 536,74 | 10,00 |
| Cheque especial | 14,00 | 47,38 | 1.101,98 | 14,00 |

(1) Dados disponiveis ate 5.4.95 ND - Não disponivel

## TRATORES NOVOS E USADOS R$

| MARCA/MODELO | | ZERO | 94 | 93 | 92 | 91 | 90 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| MASSEY | 250 | 16.700 | 15.030 | 13.527 | 12.174 | 10.956 | 9.860 |
| MASSEY | 350 | 15.800 | 14.220 | 12.798 | 11.518 | 10.366 | 9.329 |
| VALMET/GRS-Fruteiro | | 20.600 | 16.200 | 14.400 | 10.800 | 9.000 | 7.200 |
| MASSEY | 265 | 19.900 | 17.910 | 16.119 | 14.507 | 13.056 | 11.750 |
| MASSEY | 275 | 23.900 | 21.510 | 19.359 | 17.423 | 15.589 | 14.112 |
| VALMET | 885 | 30.200 | 23.895 | 21.240 | 15.930 | 13.275 | 10.620 |
| MASSEY | 292 | 31.400 | 20.260 | 25.434 | 22.890 | 20.601 | 18.540 |

Preços médios calculados pelas agências, referentes ao dia 3/4/95
ND - Não disponivel


cooxupé

**COOPERATIVA REGIONAL DE CAFEICULTORES DE GUAXUPÉ LTDA**

Rua Manoel Joaquim Magalhães Gomes, 400
Tel/Pabx.:(035) 5515000 Ramal 358
Telefax.:(035)357256/357265
Fax.:(035)5515200 - Guaxupé - MG
Caixa Postal, 104 - CEP 37800-000



*Conselho de Administração:*
Isaac Ribeiro Ferreira Leite
*Presidente*
Carlos Alberto T. da Costa
*Vice - Presidente*
Antonio Carlos de Oliveira Martins
Renato Ribeiro
Getúlio José dos Reis
Carlos Augusto Rodrigues de Melo
Gabriel Francisco Junqueira Andrade
João Paulo Maia
*Superintendentes*
Orlando Carlos Editore
Arthur Octávio Varella Calheiros
José Geraldo Rodrigues de Oliveira
Otto Vilas Boas
Joaquim Mário Ferreira Leite
Joaquim Luiz de Castro Filho
*Conselho Fiscal*
*Efetivos*
Eduardo Engel
José João Salgado Rodrigues Reis
Romeu Bachião
*Suplentes:*
Ademar Vedovato
Mário Cardoso Monteiro
Elcio Pedro de Souza

**FAZENDA VEREDÃO**
Fátima - TO
Proprietário: Condomínio Veredão

**FAZENDA SARANDI**
Juscimeira - MT
Proprietário: Diogo de Toledo Lara Neto

**FAZENDA OS BOIS**
Vitória da Conquista - BA
Proprietário: Palheta Bahia Agrícola e Pecuária Ltda.

**FAZENDA DA MATA**
Araguacema - TO
Proprietário: Agropecuária Córrego Azul Ltda.

**FAZENDA SÃO VICENTE AGROPASTORIL**
Brejinho de Nazaré - TO
Proprietário: Vicente Di Bella e Filhos

**FAZENDA SÃO LUIZ**
Ribeirão Cascalheira - MT
Proprietário: Agropecuária Bombig Ltda.

**ENGENHO SÃO FRANCISCO**
Quirinópolis - GO
Proprietário: Oswaldo Mesa Campos

**FAZENDA RANCHO VERDE**
Novo São Joaquim - MT
Proprietário: Domingos Teixeira Rodrigues

**RANCHO SS**
Alta Floresta - MT
Proprietário: Pedro Silvestre da Silva

**FAZENDA RANCHO AMARUZA**
Barra do Garças - MT
Proprietário: José Francisco Galindo

**FAZENDA UNIÃO**
Barra do Garças - MT
Proprietário: Valdecir L. Ferrari

**FAZENDA SÃO CAETANO**
Morrinhos - GO
Proprietário: Condomínio Antonio Laefort Filho

**FAZENDA SANTO ANTONIO DE PÁDUA**
São Carlos - SP
Proprietário: Mario Milani

**FAZENDA RANCHO ALVORADA**
Barra do Garças - MT
Proprietário: Nilson Ferreira

**FAZENDA PAULISTINHA**
Barra do Garças - MT
Proprietário: Superga Comércio e Agropecuária SA

# Não importa a seca, não importa a geada.

# TIFTON - 85

Geórgia - U.S.A.

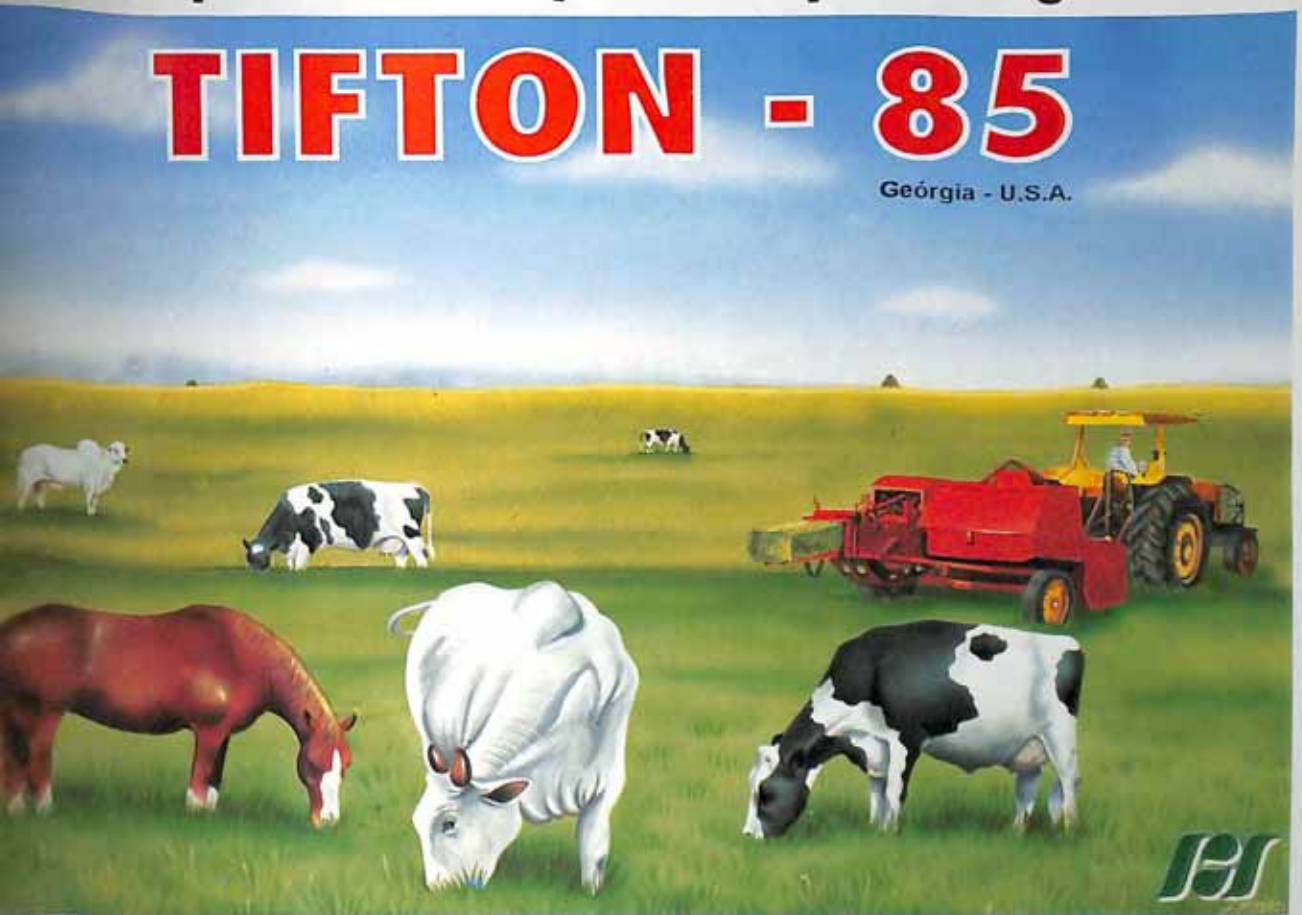

## É resistente. É produtivo. É TIFTON - 85.

TIFTON - 85 - Gramínea que permaneceu verde durante toda a seca e as geadas ocorridas em 1994, pois possui rizomas grossos com grandes reservas de nutrientes.

PASTOREIO - Altamente resistente ao pisoteio, com alta produção, palatabilidade e digestibilidade. Chegando a atingir nas pontas das folhas 30% de proteínas.

GADO DE LEITE E CORTE - Alta palatabilidade, digestibilidade, volume de massa verde e proteínas.

CAVALOS - Excelente palatabilidade e digestibilidade.

FENO - O feno chega a ser superior a alfafa em proteínas, palatabilidade e digestibilidade com cortes a cada 4 semanas.

PLANTIO - Recomendado em todo território nacional, com solos arenosos médios e argilosos devidamente corrigidos e adubados.

*Atenção, plantar somente a rama inteira com muita umidade no solo.*

**FAZENDAS PRADO**

*Vendas de mudas:*
Também dispomos de mudas da TIFTON - 68.
Rua Coronel Joaquim Mendes, 51 - PABX:(034) 281 - 2822
Fax:(034) 281-2067 - CEP 38430-000 - Tupaciguara - MG
*PRADO, ALTA TECNOLOGIA EM SEMENTES E MUDAS.*

# Neguvon®

## Líder em todos os campos

**Eficiente:**
Neguvon é o melhor no tratamento contra bernes, vermes, habronemose, sarnas, gasterofilose, oestrose e no combate à piolhos e moscas.

**Versátil:**
Neguvon pode ser utilizado através da pulverização, por via oral, pincelamento, método pour-on ou ainda através de iscas.

Neguvon®

BAYER

*Bernicida, Oestricida, Inseticida*

**Peso líquido: 150 g**
**Uso Veterinário**

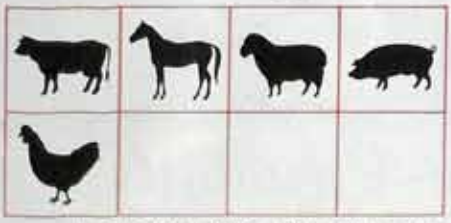

para bovinos, eqüinos, ovinos, suínos e aves

**Prático:**
Com Neguvon você trata bovinos, eqüinos, ovinos caprinos e aves.

**Econômico:**
Neguvon tem o menor custo multiplicidade de uso.

**Apresentação:**
150 e 500 g

Bayer

Se é Bayer, é bom.